तापमान
अधिकतम 27.0 डिग्री
न्यूनतम 6.0 डिग्री

हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 15 फरवरी 2026

10 विदाई समारोह में रवि बने मिस्टर व दीपिका को मिस फेयरवेल का खिताब

10 आज धूमधाम से मनाया जाएगा महाशिवरात्रि पर्व, शिवालयों पर गूजेंगे भोले के जयकारे

खबर संक्षेप

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

कोसली। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कोसली के पास सड़क हादसे के बाद गत 8 फरवरी को केस दर्ज किया था। हादसे में कार की टक्कर से बाइक सवार घायल हो गया था। पुलिस ने परिजनों के बयान पर केस दर्ज करने के बाद गाड़ी चालक का पता लगाने के प्रयास शुरू किए। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने झज्जर के जटवाड़ा निवासी राजेश को गिरफ्तार कर लिया। उसकी एसेंट कार को भी पुलिस ने कब्जे में लिया। बाद में आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

दहेज उत्पीड़न के मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न व जान से मारने की धमकी देने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिले के एक गांव निवासी विवाहिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच काउंसलिंग के जरिए समझौता कराने के प्रयास किए थे। कई बार पुलिस थाने में दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई, लेकिन उनमें सुलहनामा नहीं हुआ। पुलिस ने गत 3 फरवरी को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के बींदपुर निवासी राकेश को गिरफ्तार किया है। आरोपी को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

पोक्सो एक्ट के आरोपी भेजे गए जेल

रेवाड़ी। थाना मॉडल टाउन पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत गिरफ्तार किए गए महिला सहित दो आरोपियों को जेल भेज दिया। पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर पुलिस ने 13 फरवरी को पोक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने राजस्थान के नीमराणा निवासी राजेश और गुरूग्राम के नरसिंहपुर निवासी नीतू देवी को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेजने के आदेश दिए गए। एक अन्य मामले में पुलिस यूपी के बसाय निवासी प्रिंस को पोक्सो एक्ट के तहत गिरफ्तार किया है।

अमानत में खयानत का मामला दर्ज

बावल। थाना बावल पुलिस ने बाइक मांगकर ले जाने के बाद वापस नहीं लौटाने के आरोप में एक व्यक्ति के खिलाफ अमनात में खयानत का केस दर्ज किया है। पुलिस शिकायत में किशनपुरा निवासी सूबेसिंह ने बताया कि नांगल तेजू निवासी राहुल उसके भतीजे सोमबीर की बाइक मांगकर ले गया था। लगभग एक माह बीत जाने के बाद भी उसने बाइक नहीं लौटाई। संपर्क करने पर वह कोई संतोषजनक जवाब भी नहीं दे रहा है। पुलिस ने उसकी शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद आरोपी व बाइक का पता लगाने के प्रयास शुरू कर दिए।

पांच फरवरी को नहर आना बंद होने के बाद शुरू की गई पानी की राशनिंग

शहर में चौदह दिन बाद आएगी नहर, शहरवासियों को किस्तों में मिल रहा पानी, गर्मी में बढ़ेगी किल्लत

नहर में पानी छोड़ने का शेड्यूल 24 दिन का है, जबकि 16 दिन नहर में पानी चलता है। गर्मी के अप्रैल, मई, जून व जुलाई माह में पानी का और भी संकट पैदा होने वाला है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

आगामी डेढ माह बाद गर्मी पूरी तरह दस्तक देने वाली है। पिछले एक दशक से शहर के लोगों को सर्दी हो या गर्मी किस्तों में पानी मिलता है। नहरी पानी समय पर नहीं आने की स्थिति में शहर के लोगों को एक-एक बूंद पानी के लिए तरसना पड़ता है। एक दशक से जन स्वास्थ्य विभाग स्टोरेज की क्षमता कम होने के कारण गर्मी के मौसम में पानी की आपूर्ति अल्टरनेट-डे करता आ रहा है। समस्या उस समय और भी विकराल हो जाती है, जब नहरी पानी का आपूर्ति में विलंब हो जाता है। शहर के लोगों को टैंकरों से पानी खरीदना पड़ता है। शहर में जनवरी के पहले सप्ताह में भी पानी का संकट हो गया था। जनस्वास्थ्य विभाग की ओर से जनवरी से अब दूसरी बार पानी की राशनिंग शुरू की गई है। 5 फरवरी को नहर में पानी आना बंद होने के बाद विभाग की ओर से एक सप्ताह से शहरवासियों को एक दिन छोड़कर एक दिन पानी दिया जा रहा है। जेएलएन नहर में अब 1 मार्च को पानी छोड़ा जाएगा। नहर में पानी छोड़ने का शेड्यूल 24 दिन का है, जबकि 16 दिन नहर में पानी चलता है। गर्मी के अप्रैल, मई, जून व जुलाई माह में पानी का और भी संकट पैदा होने वाला हैं, क्योंकि जनस्वास्थ्य विभाग की ओर से पानी की स्टोरेज करने के लिए नया वाटर वाटर वर्क्स बनाने की योजना सिरे नहीं चढ़ रही है।

रेवाड़ी। कालाका वाटर वर्क्स स्थित पानी स्टोरेज टैंक। फोटो : हरिभूमि

नहर आने के बाद ही पानी सप्लाई सुचारू होगी

शहरवासियों को एक दिन छोड़कर एक दिन पानी दिया जा रहा है। जेएलएन नहर में पानी आना 5 फरवरी को बंद हो गया था। अब एक मार्च को नहर में पानी आना शरू होगा। नहर आने के बाद ही पानी सप्लाई सुचारू होगी। नया वाटर वर्क्स बनने से शहर को पानी की किल्लत से निजात मिलेगी।
-हेमंत कुमार, जेई, जनस्वास्थ्य विभाग।

मौजूदा वाटर वर्क्स की पानी स्टोरेज क्षमता कम

कालाका और लिसाना दोनों वाटर वर्क्स प्लांटों की क्षमता को देखते हुए शहर में पानी की डिमांड पूरी करना आसान नहीं है। इसके लिए कम से कम चार वाटर टैंकों के साथ नए वाटर वर्क्स की आवश्यकता है। कालाका वाटर वर्क्स के पांच टैंकों की क्षमता 950 गैलन पानी स्टोरज की है, जबकि लिसाना के दो वाटर टैंकों की क्षमता 340 गैलन व एक नए वाटर टैंक की पानी स्टोरेज क्षमता 32 करोड़ 640 लाख लीटर है। नहरी पानी का शेड्यूल 16-24 दिन का चल रहा है यानि 16 दिन नहर में पानी आता है और 24 दिन नहर बंद रहती है। शहर में प्रतिदिन 30 एमएलडी से ज्यादा पानी की खपत होती है। कालाका वाटर वर्क्स से प्रतिदिन 22.5 एमएलडी व लिसाना से 5.32 एमलडी पानी की आपूर्ति होती है।

रेवाड़ी। प्रदर्शनी में स्टॉल्स का अवलोकन करते शिक्षक व अभिभावक।

राज स्कूल में आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस कला एवं शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन

रेवाड़ी। राज इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को पेरेंट्स टीचर मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें अभिभावकों को बच्चों के अकादमिक नतीजों की जानकारी दी गई। इस दौरान स्कूल के एंटरप्रेन्योर के बच्चों ने पीटीएम को और अधिक रोचक बनाने के लिए आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, कला एवं शिल्प प्रदर्शनी और खाद्य स्टॉल लगाए, जिनमें उन्होंने अपने हाथों से बनाए गए खाद्य पदार्थ बिक्री किए। स्कूल निदेशक नवीन सैनी ने बताया कि इस तरह की गतिविधियों से बच्चों में आत्मविश्वास की भावना जागृत होती है और उन्हें कुछ नया सीखने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, स्कूल में विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के लिए मेगा आई हेल्थ अवेयरनेस प्रोग्राम भी रखा गया, जिसमें डा. प्रतीक्षा शर्मा ने आंखों की सुरक्षा को लेकर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आंखों को हेल्दी रखने के लिए विटामिन ए, सी और ई युक्त भोजन का सेवन करें। आंखों की एक्सरसाइज करने से आंखों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और दृष्टि में सुधार होता है। स्कूल चेयरमैन राजेंद्र सैनी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्य भी मौजूद थे।

रीजनल सेंटर की छात्राओं ने सूरज कुंड मेले में ली हस्तशिल्प कला की जानकारी

- भ्रमण का उद्देश्य छात्राओं को हस्तशिल्प के क्षेत्र में ज्ञान और अनुभव प्रदान करना था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कृष्ण नगर गांव स्थित भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय के रीजनल सेंटर की छात्राओं ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय सूरज कुंड मेले का भ्रमण किया। फरीदाबाद में आयोजित मेले में देश विदेश के कारीगरों और कलाकारों की ओर से अपनी कला और शिल्प कौशल का प्रदर्शन किया जा रहा है। निदेशक डा. यशपाल शर्मा ने बताया कि मेले में छात्राओं ने विभिन्न राज्यों और देशों की पारंपरिक कलाओं, हस्तशिल्प, लोक संगीत, नृत्य और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को देखा तथा हस्तशिल्प के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। छात्राओं को हथकरघा, बुनाई और अन्य पारंपरिक हस्तशिल्प से संबंधित कौशल सीखने का अवसर मिला। डा. अनिल कुमार ने बताया कि भ्रमण का उद्देश्य छात्राओं को हस्तशिल्प के क्षेत्र में ज्ञान और अनुभव प्रदान करना था। छात्राओं के साथ डा. सोनिया यादव, अंजलि पांचाल,अनिता देवी, प्रवेश, अंजलि , अजयपाल, ज्योति यादव व सविता यादव मौजूद रही।

रेवाड़ी। सूरजकुंड हस्तशिल्प मेले के भ्रमण के लिए रवाना होती छात्राएं।

आत्मघाती हमलावर ने विस्फोटकों से भरी गाड़ी को सीआरपीएफ के काफिले से टकरा दिया था

पूर्व सैनिकों व समाजसेवियों ने पुलवामा हमले के शहीदों को अर्पित की श्रद्धांजलि

- पुलवामा हमला केवल एक घटना नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कोसली के शहीदी स्मारक पर शनिवार को पूर्व सैनिकों व समाजसेवियों ने पुलवामा में 14 फरवरी 2019 को हुए आतंकी हमले की बरसी पर बलिदान हुए वीर जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने कहा कि पुलवामा हमला केवल एक घटना नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती था।आत्मघाती हमलावर ने विस्फोटकों से भरी गाड़ी को सीआरपीएफ के काफिले से टकरा दिया था, जिसमें 40 जवान मौके पर ही शहीद हो गए थे और कई अन्य घायल हुए थे। भारत ने इस कायराना हमले का मजबूती से जवाब दिया और दुनिया को अपनी सैन्य शक्ति व संकल्प का परिचय कराया। पूर्व सैनिकों ने कहा कि 14 फरवरी भारत के लिए उन बहादुर सैनिकों को याद करने का दिन है, जिन्होंने कर्तव्य पथ पर चलते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

रेवाड़ी। पुलवामा हमले के बलिदानियों को श्रद्धांजलि देते लोग। फोटो : हरिभूमि

ये मौजूद रहे

इस अवसर पर भाजपा नेता वीर कुमार यादव, कोसली के सरपंच रामकिशन जांगड़ा, सहायक कमांडेंट अजीत सिंह, इंस्पेक्टर रतन सिंह, एएसआई जितेंद्र, पूर्व सैनिक लीग कप्तान करतार सिंह, ग्रामीण क्षेत्रीय शिक्षा समिति अध्यक्ष एडवोकेट संजय यादव, एडवोकेट रमेश शर्मा,एडवोकेट रिंकू, कप्तान करम सिंह, ओमप्रकाश डाबला, पंच शारदा देवी, पूर्व सरपंच सुदर्शन यादव, एडवोकेट रिंकू, रामफल, ओमप्रकाश डाबला, पूर्व प्रिंसिपल ढुलीचंद यादव, सूबेदार महेंद्र सिंह, लै. प्रहलाद सिंह, कैप्टन सहीराम, डीएसपी सुजान सिंह, डीएवी कालेज प्रिंसिपल जय सिंह, डीएवी स्कूल प्रिंसिपल सुनील यादव व सूबदारे शेर सिंह उपस्थित थे।

19.30 लाख रुपये की साइबर ठगी करने वाला पांचवां आरोपी काबू

- पुलिस इस मामले में चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

साइबर थाना पुलिस ने गत वर्ष अगस्त माह में सेक्टर-4 निवासी एक व्यक्ति से शेयर मार्केट में निवेश करने के नाम पर 19.30 लाख रुपये की साइबर ठगी करने के मामले में संलिप्त एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान एमपी के जिला सिंगरोली के वार्ड नंबर-31 निवासी संजीव कुमार सिंह के रूप में हुई है। पुलिस मामले में चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी संजीव कुमार सिंह। फोटो : हरिभूमि

शेयर मार्केट में पैसा निवेश करने पर मुनाफा कमाने का लालच दिया

सेक्टर-4 निवासी अजीत सिंह 5 अगस्त 2025 को मोबाइल पर यश सिक्योरिटीज सर्च कर रहा था। इसी दौरान उसके व्हाट्स एप पर एक लिंक आ गया। भेजने वाले ने उसे लिंक के जरिए खाता खोलने को कहा। इसके बाद उसने लिंक के जरिए अपनी आईडी बना ली। उसे शेयर मार्केट में पैसा निवेश करने पर मोटा मुनाफा कमाने का लालच दिया गया, लेकिन उसने पैसा निवेश करने से मना कर दिया। इसके बाद उसे बार-बार पैसा निवेश करने को कहा गया, तो उसने अपनी पत्नी के खाते से पहले 5 हजार रुपये और उसके बाद 10 हजार रुपये बताए गए खाता नंबरों पर ट्रांसफर कर दिया। उसके खाते में काफी मुनाफा दिखाया गया। इसके बाद उससे कई ट्रांजेक्शन के जरिए कुल 19.30 लाख रुपये ट्रांसफर करा लिए। जब उसने पैसा निकालने का प्रयास किया, तो उससे 16 लाख 43 हजार 711 रुपये और जमा कराने को कहा गया। इसके बाद उसको ठगी का पता चला। पुलिस ने मामले में संलिप्त चार आरोपी राजस्थान के जिला दौसा के गांव झिलकी ढी जागीर निवासी महेंद्र सैनी, जिला अलवर के गांव पिनान निवासी सुरेंद्र, जिला अलवर के गांव प्रतापपुरा निवासी सचिन गुर्जर व एमपी के जिला भोपाल के मिसरोद की कोरल कोटेज कॉलोनी हाल आबाद कैरट बावडीया कब्ल भोपाल निवासी निशीकान्त मिश्रा को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक और आरोपी संजीव कुमार सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी संजीव कुमार सिंह व निशीकान्त मिश्रा के जॉइंट बैंक खाते में ठगी की 14.25 लाख रुपये की राशी ट्रांसफर हुई थी।

गांव दुल्हेड़ा कलां में कुएं में गिरा नीलगाय का बच्चा

ग्रामीणों ने सुरक्षित बाहर निकाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बावल

गांव दुल्हेड़ा कलां में कुएं में नीलगाय का बच्चा गिर गया। खेतों में काम कर रहे ग्रामीणों ने पुलिस व फायर बिग्रेड को सूचना दी। ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद बच्चे को सुरक्षित कुएं से बाहर निकाला। कुएं से बाहर निकलते ही नीलगाय का बच्चा खेतों में भाग गया। गांव निवासी राम सिंह के खेत में एक पुराना कुआं बना हुआ है, जोकि खंडहर हो चुका है। दोपहर के समय एक नीलगाय का बच्चा कुएं में गिर गया। आसपास के लोगों ने नीलगाय का बच्चा कुएं में गिरते देख पुलिस व फायर ब्रिगेड को सूचना दी। ग्रामीणों ने अथक प्रयास करके ट्रैक्टर पर लगी मशीन की सहायता से दो लोगों को कुएं में उतारा और रस्सी की सहायता से नीलगाय के बच्चे को कुएं से बाहर निकाला। ग्रामीण नीलगाय के बच्चे की चोट देखते इससे पहले वह खेतों की ओर भाग गया। इस दौरान पुलिस और फायर ब्रिगेड भी मौके पर पहुंच गई।

रेवाड़ी। नीलगाय के बच्चे को कुएं से निकालते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

बाबा रुपादास मंदिर में दो दिवसीय महाशिवरात्रि पर्व का हुआ आगाज

डूंगरवास में खेल प्रतियोगिता शुरू,नेशनल कबड्डी के हुए मुकाबले

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

गांव डूंगरवास के बाबा रूपदास मंदिर प्रांगण में शनिवार को खेल प्रतियोगिताओं के साथ दो दिवसीय महाशिवरात्रि पर्व का आगाज हो गया। मुख्यातिथि बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंधक जिले सिंह यादव व विशिष्ट अतिथि के तौर पर रसगण गांव के सरपंच करण सिंह यादव ने पर्व का शुभारंभ किया। इस दौरान बाबा रूपदास मंदिर कमेटी के प्रधान मास्टर बीरेंद्र सिंह भाटोटिया, डूंगरवास के सरपंच विपिन कुमार, कमेटी सचिव मास्टर सुरेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष सजन फौजी, थानेदार बीरेंद्र सिंह, मेजर बीरेंद्र नीमरानिया, पूर्व सरपंच सुरेश कुमार, मास्टर कुलदीप, भूदेव यादव, ब्रह्मप्रकाश जैन, पीटीआई दीप सिंह, विजय कुमार, दिनेश यादव व वंश सुल्तानिया मौजूद थे।

बाबा रुपादास मंदिर प्रांगण में महाशवरात्रि पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। 15 फरवरी को देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ पर्व संपन्न होगा। समापन अवसर पर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं का सम्मानित किया जाएगा। पहले दिन नेशनल कबड्डी के लीग मुकाबले हुए। इसके अलावा 100, 400, 1600 मीटर लड़कों की दौड़, गोला फेंक, लॉन्ग जंप व रस्साकसी के मुकाबले कराए गए। रविवार को अंडर-14 लड़कों की 100 मीटर दौड़, लड़कियों की 100 मीटर दौड़, बुजुर्गों की दौड़ और महिलाओं की मटका दौड़ होगी।

रेवाड़ी। खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। प्रतियोगिता में कबड्डी खेलते खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

इस समय सोना निवेश का बढ़िया विकल्प बनकर उभर रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स यानी युवा भारतीयों का सोने पर भरोसा मजबूत बना हुआ है, लेकिन इसे खरीदने का तरीका धीरे-धीरे बदल रहा है। स्मिटन पल्सएआई के सर्वे में सामने आया है कि सोने की खरीद अब अधिक व्यक्तिगत और छोटी रकम/मात्रा में होने लगी है। 18-39 वर्ष के 5,000 उपभोक्ताओं पर आधारित इस अध्ययन के अनुसार पारंपरिक, परिवार-केंद्रित खरीदारी की जगह अब तर्क-आधारित और व्यक्तिगत फैसलों का महत्व बढ़ रहा है। जेन जी और मिलेनियल्स सोने की खरीद को अब शादी-समारोह से आगे बढ़कर व्यक्तिगत माइलस्टोन और पहली सैलरी जैसे शुरुआती निवेश के रूप में देख रहे हैं।

सुरक्षा के मामले में पहली पसंद

आधुनिक निवेश विकल्पों की बढ़ती पहुंच के बावजूद युवा भारतीयों के लिए सोना अब भी सबसे भरोसेमंद निवेश बना हुआ है। सर्वे के अनुसार यदि आज 25,000 रुपये निवेश करने हों तो 61.9% उत्तरदाता सोने को चुनेंगे। यह आंकड़ा म्यूचुअल फंड (16.6%), फिक्स्ड डिपॉजिट (13%), शेयर बाजार (6.6%) और क्रिप्टो (1.9%) से काफी आगे है। आर्थिक अनिश्चितता के समय भी सोने पर भरोसा कायम है। 65.7% लोगों ने कहा कि बैंक बचत, म्यूचुअल फंड या इक्विटी की तुलना में सोना उन्हें सबसे सुरक्षित विकल्प लगता है। यह ट्रेंड दर्शाता है कि जेन जी और मिलेनियल्स दोनों के लिए सोना अब भी वित्तीय सुरक्षा का प्रमुख सहारा बना हुआ है।

छोटी खरीदारी बन रही नया ट्रेंड

सर्वे से स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब सोने की बड़ी और कम अंतराल वाली खरीदारी से हटकर छोटी और नियमित खरीदारी का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। हाल की 61.9% खरीद 5 ग्राम से कम की रही, जिसमें 27.5% लोगों ने 2 ग्राम से कम और 34.4% ने 2 से 5 ग्राम के बीच सोना खरीदा। अब 42% परिवार समय-समय पर छोटी मात्रा में सोना खरीदना पसंद कर रहे हैं, जबकि 58% अभी भी एकमुश्त और अवसर आधारित खरीद करते हैं।

24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

जेन जी और मिलेनियल्स की पहली पसंद बना सोना

परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण

निवेश के मामले में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन सोने की खरीद के फैसले अब तेजी से व्यक्तिगत होते जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक 66.7% उत्तरदाताओं ने कहा कि आज सोना खरीदना मुख्य रूप से व्यक्तिगत और स्वयं प्रेरित निर्णय बन चुका है, न कि केवल पारिवारिक प्रभाव से लिया गया फैसला। 42.3% लोगों ने बताया कि उनके घर में हाल की सोने की खरीद की पहल उन्होंने खुद की, जबकि 40% ने माता-पिता या बड़े परिवार के सदस्यों को इसका श्रेय दिया। यह बदलाव पीढ़ियों के बीच स्पष्ट अंतर को दिखाता है। जेन जी अब कब और कैसे सोना खरीदना है, इसका फैसला खुद लेने में अधिक आत्मविश्वास दिखा रहे हैं और इसे व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय मानते हैं। वहीं, मिलेनियल्स अब भी गोल्ड को परिवार की योजना और दीर्घकालिक सुरक्षा के नजरिए से देखते हैं, जहां खरीदारी सामूहिक प्राथमिकताओं से प्रभावित रहती है।

अब शादियों तक सीमित नहीं

दिलचस्प बात यह है कि पहली बार सोना खरीदना अब केवल शादी जैसे अवसरों तक सीमित नहीं रहा। 24.3% लोगों ने अपनी पहली सैलरी या व्यक्तिगत आय के बाद पहली बार सोना खरीदा, जबकि 23.9% ने इसे निवेश के रूप में चुना। यह ट्रेंड पीढ़ियों के व्यवहार में अंतर भी दिखाता है। जेन जी छोटे और व्यक्तिगत माइलस्टोन से सोने की खरीद शुरू कर रहे हैं, जबकि मिलेनियल्स इसे जीवन की बड़ी घटनाओं और दीर्घकालिक सुरक्षा से जोड़कर देखते हैं।

सोने की खरीद में डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ा है। इसके बावजूद सोने की खरीदारी में अभी भी पारंपरिक चैनल्स पर भरोसा अधिक है। सर्वे के अनुसार, 38.3% लोग सबसे अधिक सोना बड़ी ब्रांडेड ज्वेलरी चेन से खरीदते हैं, जबकि 34.7% उपभोक्ता स्थानीय ज्वैलर पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, केवल 5.2% लोग ही ऑनलाइन प्लेटफॉर्म या ऐप के जरिए सोना खरीद रहे हैं। खरीद से जुड़ी चिंताओं में शुद्धता और प्रामाणिकता सबसे बड़ी चिंता के रूप में सामने आई, जिसे 49.4% उत्तरदाताओं ने प्रमुख कारण बताया।

खरीद के बाद पछतावा भी बड़ा संकेत

सर्वे की सबसे महत्वपूर्ण बात यह सामने आई कि सोना खरीदने के बाद बड़ी संख्या में युवा उपभोक्ता असमंजस या पछतावा महसूस करते हैं। करीब 67.1% उत्तरदाताओं ने माना कि उन्हें अक्सर या कभी-कभी सोना खरीदने के बाद पछतावा हुआ है। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह खरीदी गई कीमत (38.9%) रही, जबकि 33.5% लोगों ने ज्वैलरी, सिक्के या डिजिटल गोल्ड जैसे फॉर्मेट को लेकर भ्रम को कारण बताया। वहीं 18.8% ने पर्याप्त जानकारी के अभाव को जिम्मेदार ठहराया। यह ट्रेंड दिखाता है कि सोने पर भरोसा मजबूत है, लेकिन खरीद प्रक्रिया को लेकर युवाओं का आत्मविश्वास अभी भी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है।

भविष्य में सोना खरीदने का इरादा

लोग भविष्य में भी खूब सोना खरीदना चाहते हैं। इस सर्वे में यह भी सामने आया कि भविष्य में सोना खरीदने का इरादा बहुत मजबूत है। 52.7% उत्तरदाता अगले 12 से 24 महीनों में सोना खरीदने के लिए "बहुत संभावना" दिखाते हैं। कुल मिलाकर सोने का स्थान युवा भारतीयों के बीच अब भी अडिग है, हालांकि खरीदारी के तरीके बदल रहे हैं। छोटे निवेश, व्यक्तिगत निर्णय और पारंपरिक खरीदारी चैनल्स में भरोसा दर्शाता है कि सोना का आकर्षण मजबूत है और आने वाले समय में भी यह सुरक्षित निवेश के रूप में रहेगा।

महंगाई के दौर में बच्चों के लिए बनाएं फंड

उच्च शिक्षा के लिए करें मजबूत प्लानिंग

तैयारी
बिजनेस डेस्क

- तेजी से महंगी हो रही पढ़ाई, अभी नहीं संभले तो पड़ेगा भारी
- एसआईपी समेत कई निवेश विकल्पों के बारे में सोचना होगा
- एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति बनानी होगी

आज के दौर में शिक्षा केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी बन चुकी है, लेकिन इसके साथ स्कूल और कॉलेज की फीस सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेशनल बोर्ड, प्रोफेशनल कोर्स, विदेश में पढ़ाई, हॉस्टल और रहने-खाने का खर्च ये सभी मिलकर उच्च शिक्षा को बेहद महंगा बना देते हैं। ऐसे में माता-पिता के लिए यह जरूरी हो गया है कि वे समय रहते अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए व्यवस्थित और दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनाएं। अक्सर देखा जाता है कि माता-पिता एक अनुमानित रकम तय कर लेते हैं और हर महीने एसआईपी शुरू कर देते हैं। यह एक अच्छा कदम है, लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल एसआईपी पर निर्भर रहना पर्याप्त है? बदलते आर्थिक हालात और शिक्षा महंगाई को देखते हुए जवाब है नहीं। जरूरत है एक संतुलित, बहुआयामी और समयबद्ध रणनीति की।

जल्दी शुरुआत ही सबसे बड़ा फायदा

उच्च शिक्षा की योजना में समय सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यदि बच्चा छोटा है और आप अभी से निवेश शुरू करते हैं, तो कंपाउंडिंग का लाभ कई गुना बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आप 10–15 साल तक नियमित एसआईपी करते हैं, तो छोटी-छोटी मासिक बचत भी बड़ा फंड बना सकती है। देर से शुरुआत करने पर आपको अधिक रकम निवेश करनी पड़ सकती है, जिससे घरेलू बजट पर दबाव बढ़ सकता है।

एक निवेश विकल्प पर निर्भर न रहें

अक्सर लोग पूरे शिक्षा फंड को इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश कर देते हैं और फीस भरने तक उसे वहीं रखते हैं। लेकिन यदि फीस के समय बाजार में गिरावट आ जाए, तो आपके फंड की वैल्यू घट सकती है। इसलिए जरूरी है कि जैसे-जैसे फीस का समय नजदीक आए, निवेश को सुरक्षित विकल्पों में शिफ्ट किया जाए। उदाहरण के लिए लक्ष्य से 3–4 साल पहले धीरे-धीरे डेट फंड या एफडी में ट्रांसफर करें। अंतिम 1–2 साल में जोखिम बहुत कम कर दें और पैसा लिक्विड या सुरक्षित साधनों में रखें। यह रणनीति आपको बाजार के उतार-चढ़ाव से बचाती है।

शिक्षा महंगाई का सही अनुमान लगाएं

भारत में शिक्षा महंगाई दर सामान्य महंगाई से अधिक, लगभग 8–12% तक मानी जाती है। यदि आज किसी कोर्स की फीस 10 लाख रुपये है, तो 10 साल बाद वही कोर्स 20–25 लाख रुपये तक हो सकता है। इसलिए भविष्य की लागत का अनुमान लगाते समय महंगाई को शामिल करना जरूरी है। केवल वर्तमान फीस देखकर योजना बनाना पर्याप्त नहीं है।

अन्य खर्चों को भी जोड़ें

अक्सर माता-पिता केवल ट्यूशन फीस को ध्यान में रखकर फंड बनाते हैं, जबकि वास्तविक खर्च इससे कहीं अधिक होता है। विशेषकर विदेश में पढ़ाई के मामले में रहने और खाने का खर्च, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, लैपटॉप और अन्य गैजेट्स, एप्लिकेशन फीस, इंटर्नशिप या प्रोजेक्ट खर्च इन सभी खर्चों को जोड़कर ही वास्तविक लक्ष्य तय करें। विदेश में पढ़ाई का खर्च तो डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा में होने के कारण और भी बढ़ सकता है।

एजुकेशन लोन से न घबराएं

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को नकारात्मक नजर से देखते हैं, लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। यदि समझदारी से लिया जाए, तो एजुकेशन लोन रिटायरमेंट सेविंग्स को बचाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास शिक्षा और रिटायरमेंट दोनों के लिए सीमित फंड है, तो शिक्षा के लिए आंशिक लोन लेकर आप अपने रिटायरमेंट कॉर्पस को सुरक्षित रख सकते हैं। इसके अलावा, एजुकेशन लोन पर टैक्स लाभ भी मिलता है और पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चे खुद इसे चुकाने में योगदान दे सकते हैं।

रिटायरमेंट से समझौता न करें

बच्चों की पढ़ाई महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी रिटायरमेंट सुरक्षा को नजरअंदाज करना भविष्य में आर्थिक संकट पैदा कर सकता है। शिक्षा के लिए आप लोन ले सकते हैं, लेकिन रिटायरमेंट के लिए नहीं। इसलिए दोनों लक्ष्यों में संतुलन बनाना जरूरी है।

नियमित समीक्षा करें

हर साल अपनी योजना की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है, तो **SIP** की राशि भी बढ़ाएं। अगर लक्ष्य की लागत बदलती है या बच्चे की रुचि अलग दिशा में जाती है, तो योजना में संशोधन करें।

अनुशासन ही सफलता की कुंजी

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए पहले से तैयारी करना अनिवार्य हो गया है। केवल बचत नहीं, बल्कि स्मार्ट निवेश, जोखिम प्रबंधन और समय पर समीक्षा ही मजबूत शिक्षा फंड का आधार बनते हैं। जल्दी शुरुआत, विविध निवेश, महंगाई का सही अनुमान और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन ये सभी कदम मिलकर आपके बच्चे के सपनों को साकार कर सकते हैं।

प्राइवेट नौकरी वाले जान लें अहम टिप्स

आर्थिक रूप से रहेंगे मजबूत

- अपने वेतन का करीब 20 फीसदी शुरू से ही निवेश करें
- अपना बजट बनाएं, लक्ष्य तय करें और गैरजरूरी खर्चों से बचें
- सैलरी 10% बढ़ती है, तो कम से कम 5% अतिरिक्त निवेश करें
- व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस जरूर लें, यह बीमारी में काम आएगा

सुझाव
बिजनेस डेस्क

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करने वाले लाखों युवाओं के लिए करियर की शुरुआत उत्साह और सपनों से भरी होती है। अच्छी सैलरी, कॉर्पोरेट लाइफस्टाइल और तेजी से बढ़ते अवसर आकर्षित करते हैं, लेकिन इस चमक-दमक के पीछे एक सच्चाई भी है प्राइवेट नौकरी में सरकारी कर्मचारियों जैसी पेंशन, स्थायी सुरक्षा या व्यापक सामाजिक लाभ अक्सर उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में यदि वित्तीय योजना मजबूत न हो, तो भविष्य असुरक्षित हो सकता है। करियर की शुरुआत में की गई छोटी वित्तीय गलतियां समय के साथ बड़ी समस्या बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है कि शुरुआत से ही सतर्क रहें और कुछ सामान्य लेकिन गंभीर वित्तीय भूलों से बचें।

अनियंत्रित जीवनशैली की शुरुआत

अक्सर युवा नौकरी लगते ही खर्च की आजादी का आनंद लेने लगते हैं। सैलरी आते ही किराया, घूमना-फिरना, गैजेट्स और ऑनलाइन शॉपिंग पर पैसा खर्च हो जाता है। लेकिन यदि आय और खर्च का स्पष्ट बजट न हो, तो बचत पीछे छूट जाती है। वित्तीय स्थिरता की पहली शर्त है बजट बनाना। 50-30-20 फॉर्मूला एक आसान तरीका है। इसमें 50% आय जरूरी खर्चों के लिए, 30% लाइफस्टाइल और शौक के लिए तथा 20% बचत और निवेश के लिए रखा जाता है। समस्या तब होती है जब लोग बचत वाले हिस्से को टाल देते हैं। कई बार दिखावे या सामाजिक दबाव में जरूरत से ज्यादा खर्च कर बैठते हैं। याद रखें, कमाई से ज्यादा जरूरी है पैसे का प्रबंधन।

वेतन बढ़ा, बचत नहीं

प्राइवेट सेक्टर में समय-समय पर इंक्रीमेंट और प्रमोशन मिलते हैं। लेकिन अक्सर देखा गया है कि वेतन बढ़ते ही खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसे लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन कहते हैं। नई कार, महंगा मोबाइल, ब्रांडेड कपड़े, बार-बार ट्रैवल ये सब बढ़ती आय के साथ जुड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि बचत की दर स्थिर ही रहती है या घट जाती है। समझदारी यह है कि हर वेतन वृद्धि के साथ निवेश भी बढ़ाया जाए।

निवेश को टालना

अभी तो करियर की शुरुआत है, बाद में निवेश करेंगे यह सोच सबसे खतरनाक है। निवेश में समय सबसे बड़ा हथियार है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, उतना ही कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। मान लीजिए कोई व्यक्ति 25 साल की उम्र से हर महीने 5,000 रुपये एसआईपी में निवेश करता है और दूसरा 35 साल की उम्र से 10,000 रुपये। लंबे समय में पहले व्यक्ति का फंड अधिक हो सकता है, क्योंकि उसे 10 साल का अतिरिक्त समय मिला। प्राइवेट नौकरी में पेंशन की गारंटी नहीं होती। इसलिए रिटायरमेंट फंड बनाना आपकी जिम्मेदारी है। म्यूचुअल फंड एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य लंबी अवधि के साधनों में नियमित निवेश जरूरी है।

इमरजेंसी फंड की अनदेखी

प्राइवेट सेक्टर में नौकरी की स्थिरता सीमित हो सकती है। अचानक छंटनी, कंपनी बंद होना या व्यक्तिगत कारणों से नौकरी छोड़नी पड़ सकती है। ऐसे समय में यदि इमरजेंसी फंड न हो, तो आपको कर्ज लेना पड़ सकता है या निवेश तोड़ना पड़ सकता है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि रखें।

बीमा को हल्के में लेना

कई लोग सोचते हैं कि कंपनी द्वारा दिया गया ग्रुप हेल्थ इंश्योरेंस पर्याप्त है। लेकिन नौकरी बदलते ही यह सुविधा खत्म हो सकती है। इसलिए व्यक्तिगत हेल्थ इंश्योरेंस लेना जरूरी है। इसके अलावा, यदि परिवार आप पर निर्भर है, तो टर्म लाइफ इंश्योरेंस अनिवार्य है। यह कम प्रीमियम में बड़ी सुरक्षा देता है।

कर्ज का गलत इस्तेमाल

क्रेडिट कार्ड का अत्यधिक उपयोग और पर्सनल लोन लेना भी बड़ी वित्तीय गलती है। 18% से 36% तक ब्याज दर आपकी बचत को खत्म कर सकती है। कर्ज लें तो केवल जरूरी जरूरतों के लिए, जैसे होम लोन।

अनुशासन ही असली सुरक्षा

प्राइवेट नौकरी में अवसर बहुत हैं, लेकिन जोखिम भी कम नहीं। यहां भविष्य की सुरक्षा आपके अपने हाथ में है। बजट बनाना, लाइफस्टाइल पर नियंत्रण, समय पर निवेश, पर्याप्त बीमा और इमरजेंसी फंड ये पांच स्तंभ आपकी आर्थिक मजबूती की नींव हैं। वहीं, आज का अनुशासन आपको आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक शांति दे सकता है।

शेयर बाजार की बदहाली से इक्विटी म्यूचुअल फंड में घटा निवेश

- गोल्ड ईटीएफ में निवेश 106% बढ़ा
- शेयर बाजार में इन दिनों खूब दिख रही उठापटक
- आम निवेशकों का सेंटिमेंट प्रभावित हुआ

जानकारी
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में इन दिनों उठा-पटक का दौर चल रहा है। किसी दिन शेयर बाजार का सूचकांक कुलांचे भरते हुए ऊपर चढ़ जाता है तो किसी दिन जमीन पर लोटने लगता है। तभी तो इस साल के पहले महीने यानी जनवरी 2026 में इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश थोड़ा कम हुआ। स्थिति यह रही कि इस महीने गोल्ड ईटीएफ में इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा निवेश हुआ।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी महीने के दौरान इक्विटी म्यूचुल फंड्स में 24,028 करोड़ रुपये आए। इससे एक महीने पहले यानी दिसंबर 2025 के दौरान 28,054 करोड़ रुपये आए थे। मतलब कि इस महीने निवेश में 14% की कमी आई है। यदि साल दर साल के आधार पर देखें तो जनवरी 2025 की तुलना में इस साल जनवरी में यह गिरावट 39% रही है। पिछले साल जनवरी के दौरान इस फंड में 39,687 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

इक्विटी फंड्स में कौन पहली पसंद

जनवरी के दौरान अलग-अलग तरह के इक्विटी फंडों में, फ्लेक्सीकैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने रहे। इनमें सबसे ज्यादा 7,672 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद मिडकैप फंड में 3,185 करोड़ रुपये और लार्ज एंड मिड-कैप फंड में 3,181 करोड़ रुपये का निवेश आया। स्मॉलकैप फंड में 2,942 करोड़ रुपये आए, लेकिन ईएलएसएस फंड से निवेशकों ने 593 करोड़ रुपये निकाल लिए। अगर पिछले महीने से तुलना करें, तो फोकस्ड फंड में निवेश 47% बढ़ा। दिसंबर 2025 में इनमें 1,056 करोड़ रुपये आए थे, जो जनवरी 2026 में बढ़कर 1,556 करोड़ रुपये हो गए। लार्जकैप फंड और सेक्टोरल/थीमैटिक फंड में भी पिछले महीने की तुलना में क्रमशः 28% और 10% ज्यादा निवेश आया। वहीं, मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड में निवेश पिछले महीने के मुकाबले 24% और 23% घट गया।

डेट फंड का चला जादू

जनवरी 2026 के दौरान डेट फंड में 74,827 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह अच्छी खबर है क्योंकि पिछले दो महीनों (नवंबर और दिसंबर 2025) में डेट फंड से कुल 1.58 लाख करोड़ रुपये बाहर चले गए थे। पिछले साल जनवरी की तुलना में इस साल डेट फंड में निवेश 42% कम रहा, जब 1.28 लाख करोड़ रुपये आए थे। डेट फंड की 16 अलग-अलग श्रेणियों में से, ओवरनाइट फंड में सबसे ज्यादा 46,280 करोड़ रुपये का निवेश आया। वहीं, कॉर्पोरेट बॉन्ड फंड से 11,472 करोड़ रुपये निकाल लिए गए। लिक्विड फंड में 30,681 करोड़ रुपये और मनी मार्केट फंड में 12,763 करोड़ रुपये का निवेश आया।

हाइब्रिड फंड में भी रौनक

बीते जनवरी महीने के दौरान हाइब्रिड फंड में 17,356 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 10,755 करोड़ रुपये की तुलना में 61% ज्यादा है। पिछले साल जनवरी 2025 की तुलना में यह आंकड़ा 98% बढ़ा है, जब 8,767 करोड़ रुपये का निवेश आया था। हाइब्रिड फंड की छह श्रेणियों में से, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड में सबसे ज्यादा 10,485 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद आर्बिट्रेज फंड में 3,293 करोड़ रुपये आए। आर्बिट्रेज फंड में तो पिछले महीने के मुकाबले निवेश में 2,507% की भारी बढ़ोतरी हुई, जो दिसंबर 2025 में सिर्फ 126 करोड़ रुपये था। हालांकि, इक्विटी सेविंग्स फंड और कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में पिछले महीने के मुकाबले क्रमशः 81% और 35% की गिरावट आई।

ईटीएफ में खूब हुआ निवेश

अन्य स्कीमों, जिनमें ईटीएफ और इंडेक्स फंड जैसे पैसिव फंड शामिल हैं, में जनवरी में 39,954 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह दिसंबर 2025 के 26,723 करोड़ रुपये से 50% ज्यादा है। गोल्ड ईटीएफ में तो सबसे ज्यादा 24,039 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो पिछले महीने के मुकाबले 106% ज्यादा है। हो सकता है कि सोने की कीमतों में तेज बढ़ोतरी की वजह से निवेशक इस ओर आकर्षित हुए। अन्य ईटीएफ में 15,005 करोड़ रुपये का निवेश आया। विदेशों में निवेश करने वाले फंड-ऑफ-फंड में भी भारी उछाल देखा गया।

चालीस की उम्र में कर रहे हैं रिटायरमेंट प्लानिंग तो अपना लें ये अहम टिप्स

इस उम्र में भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती हैं, अच्छी रणनीति बनाकर निवेश करेंगे तो नहीं होगी परेशानी, भविष्य सुरक्षित रहेगा।

शुरुआत
बिजनेस डेस्क

रिटायरमेंट प्लानिंग अक्सर लोग 50 की उम्र के बाद शुरू करने की सोचते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि 40 की उम्र वह मोड़ है, जहां से भविष्य की आर्थिक सुरक्षा की असली तैयारी शुरू होती है। यह उम्र आमतौर पर करियर का सबसे स्थिर और आय का सबसे मजबूत दौर होता है। आमदनी अपने शिखर की ओर बढ़ रही होती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। बच्चों की पढ़ाई, होम लोन की ईएमआई, माता-पिता की देखभाल और जीवनशैली से जुड़े खर्च। ऐसे में यदि आपने अब तक रिटायरमेंट के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा है, तो अब वक्त है इसे प्राथमिकता देने का। 40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग का मतलब है सीमित समय में अधिक प्रभावी रणनीति अपनाना। आपके पास अब 20–25 साल का कार्यकाल बचा हो सकता है। इस दौरान सही निवेश, अनुशासन और जोखिम प्रबंधन से आप एक मजबूत रिटायरमेंट कॉर्पस तैयार कर सकते हैं। सबसे पहले अपनी आय, खर्च, ईएमआई, मौजूदा निवेश और बीमा की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझें। हर महीने कितना पैसा बचता है और कितना खर्च होता है, इसका विस्तृत विश्लेषण करें। इसके साथ ही महंगाई दर, भविष्य के मेडिकल खर्च और रिटायरमेंट के बाद की जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए यह अनुमान लगाएं कि आपको कितनी रकम की जरूरत होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि रिटायरमेंट के बाद भी वर्तमान खर्च का कम से कम 70–80% हर महीने चाहिए होगा।

सबसे पहले आय, खर्च, ईएमआई व निवेश की स्थिति समझें

रिटायरमेंट को प्राथमिकता बनाएं

अक्सर लोग बच्चों की पढ़ाई या घर खरीदने को प्राथमिकता देते हैं और रिटायरमेंट को टालते रहते हैं। लेकिन याद रखें, बच्चों को शिक्षा के लिए लोन मिल सकता है, रिटायरमेंट के लिए नहीं। ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस और म्यूचुअल फंड एसआईपी जैसे साधनों में नियमित निवेश बढ़ाएं। कोशिश करें कि अपनी आय का कम से कम 15–25% हिस्सा रिटायरमेंट के लिए सुरक्षित रखें। यदि संभव हो तो हर साल आय बढ़ने के साथ निवेश राशि भी बढ़ाएं।

महंगे कर्ज से जल्दी छुटकारा पाएं

क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर 12% से 24% तक ब्याज देना आपकी संपत्ति निर्माण की क्षमता को कमजोर करता है। ऐसे कर्ज को प्राथमिकता से खत्म करें। होम लोन अपेक्षाकृत सस्ता होता है, लेकिन यदि अतिरिक्त राशि उपलब्ध हो तो प्री-पेमेंट जरूर करें। कर्ज मुक्त जीवन रिटायरमेंट की दिशा में बड़ा कदम है।

इमरजेंसी फंड बनाना न भूलें

रिटायरमेंट निवेश के साथ-साथ एक मजबूत इमरजेंसी फंड होना भी जरूरी है। कम से कम 6 से 9 महीने के खर्च के बराबर राशि सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड में रखें। यह फंड अचानक नौकरी छूटने, बीमारी या किसी अप्रत्याशित खर्च के समय सुरक्षा कवच का काम करेगा। इससे आपको निवेश तोड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

टैक्स प्लानिंग से बढ़ाएं बचत

सही टैक्स प्लानिंग से आप अपनी निवेश क्षमता बढ़ा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी, एनपीएस में अतिरिक्त निवेश (80सीसीडी(1बी), हेल्थ इंश्योरेंस (80डी) और कैपिटल गेन प्लानिंग का लाभ उठाएं। टैक्स बचत केवल बचत नहीं है, बल्कि आपके भविष्य के लिए अतिरिक्त निवेश का अवसर है।

पर्याप्त बीमा सुरक्षा सुनिश्चित करें

40 की उम्र में परिवार आप पर निर्भर होता है। इसलिए पर्याप्त टर्म लाइफ इंश्योरेंस जरूर लें, जो कम से कम आपकी वार्षिक आय का 10–15 गुना हो। साथ ही, एक अच्छा हेल्थ इंश्योरेंस प्लान भी रखें, क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ मेडिकल खर्च तेजी से बढ़ते हैं। समय-समय पर अपनी पॉलिसी की समीक्षा करना भी जरूरी है। बच्चों की शिक्षा एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, लेकिन इसे रिटायरमेंट की कीमत पर पूरा करना समझदारी नहीं है। शिक्षा के लिए अलग निवेश योजना बनाएं, जैसे कि इक्विटी म्यूचुअल फंड या चाइल्ड प्लान। ध्यान रखें कि लंबी उम्र एक बड़ा वित्तीय जोखिम है। यदि रिटायरमेंट फंड पर्याप्त नहीं होगा, तो बाद में आर्थिक निर्भरता की स्थिति बन सकती है।

नियमित समीक्षा सफलता की कुंजी

रिटायरमेंट प्लानिंग एक बार का निर्णय नहीं, बल्कि निरंतर प्रक्रिया है। हर साल अपने निवेश, खर्च और लक्ष्यों की समीक्षा करें। यदि आपकी आय बढ़ती है या जिम्मेदारियां कम होती हैं, तो निवेश की गति बढ़ाएं। पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट का संतुलन उम्र के अनुसार रखें। जैसे-जैसे रिटायरमेंट नजदीक आए, जोखिम कम करते जाएं।

स्पष्ट रणनीति अपनाएं

40 की उम्र में रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करना देर नहीं है, बशर्ते आप अनुशासित और स्पष्ट रणनीति अपनाएं। सही दिशा में उठाया गया कदम आपको आर्थिक स्वतंत्रता और सम्मानजनक जीवन दे सकता है। याद रखें, रिटायरमेंट कोई अंत नहीं, बल्कि जीवन का नया अध्याय है और इसकी तैयारी आज से ही शुरू होती है।

डीजे संचालक उड़ा रहे आदेशों की धज्जियां, लोगों के दिलों पर हमला

विवाह-शादी एवं सामाजिक समारोह में देर रात तक डीजे बजने से बीमार व्यक्तियों सहित पशु-पक्षी प्रभावित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना

विवाह-शादी एवं सामाजिक समारोह में आजकल गांव-शहर तथा मुख्य सड़क मार्गों से कानफोड़ू डीजे का शोर सुनाई दे रहा है, जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ बीमार व्यक्ति एवं दुधारू पशु तथा पक्षी बेहद प्रभावित हो रहे हैं, विद्यार्थियों की पढ़ाई भी बाधित हो रही है। बता दें कि बीते समय जिला उपायुक्त नारनौल की ओर से डीजे बजाने पर नियंत्रण रखने के आदेश जारी किए थे जो अब धराशाई हो रहे हैं। आयोजक जिला एवं उपमंडल प्रशासन के आदेशों को ठेंगा दिखाते हुए दस बजे बाद भी देर रात्री तक ऊंची आवाज में डीजे बजाते हैं। जिससे नवजात बच्चे-बिमार व्यक्तियों सहित दुधारू जानवरों पर विपरीत प्रभाव पड रहा है। उनकी धड़कन बढने से नई बीमारी पनपने का अंदेशा है। दुधारू पशु समय पर दूध नहीं दुहने दे रहे हैं। परीक्षाओं का समय सिर पर होने के चलते विद्यार्थियों की पढ़ाई भी चौपट हो रही है। आवाज सुनने के मानक डेसीबल-एम्लीट्यूड को दरकिनार कर मनमर्जी आवाज में डीजे बजाए जाते हैं। सडक पर आते-जाते ऊंची आवाज में बजने वाले डीजे से सड़क हादसे घटित होने की आशंका भी रहती है। पिछले कुछ समय से विवाह समारोह, कुआं पूजन, धार्मिक यात्रा आदि के समय डीजे का प्रचलन बढ़ा है। जो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए 50 डेसीबल तक ध्वनि सुनने लायक होती है। लेकिन कई स्पीकर वाले डीजे की तीव्रता 500 डेसिबल से अधिक होती है। जिसे सुनकर आमजन की रूह कांप उठती है। उनकी राय के मुताबिक दिन के समय 25-30 डेसीबल तथा रात्रि के समय 20-25 डेसीबल तक ध्वनि होनी चाहिए। जिला प्रशासन की ओर से रात्रि 10 बजे बाद डीजे बजाने पर पाबंदी है लेकिन आयोजन पक्ष की ओर से रातभर डीजे बजाया जाता है।

क्या कहते हैं चिकित्सक

कनीना उप नागरिक अस्पताल के चिकित्सक डॉ. सुंदर लाल ने बताया कि एम्प्लीट्यूड, आवाज तरंग के रूप में चलती रहती है। आवाज की तंरग की स्पीड जितनी हैवी होगी उतना ही नुकसानदायक मानी जाती है। साऊंड बढ़ने से एम्लीट्यूड बढ जाता है। कान के सुनने की क्षमता से अधिक आवाज साऊंड पोल्युशन को जन्म देती है। घर में बजने वाला साऊंड-टीवी आदि 10 डीबी तक होती है। सड़क किनारे ये आवाज 80-100 डेसीबल तक पहुंच जाती है। सार्वजनिक सभाओं,जलसों व यात्राओं में 50 डेसीबल से अधिक आवाज में डीजे नहीं चलाया जाना चाहिए। नियमों का उल्लंघन करने वाले डीजे संचालकों के खिलाफ सजा एवं जुर्माने का भी प्रावधान है।

क्या कहते हैं डीएसपी

डीएसपी दिनेश कुमार ने बताया कि बिना अनुमति तथा ऊंची आवाज में बजने वाले डीजे पर नजर रखी जा रही है। सभी थाना अध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्र में डीजे की आवाज पर नजर रख रहे हैं। ऐसा पाए जाने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। विवाह समारोह सहित गांव एवं शहर में रात्री 10 बजे बाद डीजे बजाने की पाबंदी है। आदेशों का उल्लंघन करने वाले डीजे संचालकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

क्या कहते हैं एसडीएम

एसडीएम डा. जितेंद्र सिंह अहलावत ने कहा कि डीजे बजाने के लिए अनुमति लेना जरूरी है। अनुमति मिलने के बाद रात 10 बजे तक धीमी आवाज में डीजे बजा सकते हैं। बिना अनुमति के बजाए जाने वाले डीजे का चालान एवं जब्त किया जाएगा।

खबर संक्षेप

महाशिवरात्रि पर्व पर बागोत में मेला आज

कनीना। महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष्य में कनीना-दादरी मार्ग स्थित गांव बागोत में रविवार 15 फरवरी को मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बता दें कि इस मेले में भारी संख्या में शिवभक्त पहुंचते हैं जो प्राकृतिक स्वयंभू शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। मेले में सुरक्षा की दृष्टि से सीसीटीवी कैमरे तथा रेलिंग लगाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। पुलिस प्रशासन तथा मठाधीश की ओर से बंदोबस्त किए गए हैं। शिव मंदिर के मठाधीश महंत रोशनपुरी ने बताया कि इस मेले में दूर-दराज से हजारों शिवभक्त हिस्सा लेते हैं। जिनकी सुरक्षा के लिए उनके तथा प्रशासन की ओर से बंदोबस्त किए जाते हैं। मेले के दृष्टिगत हरिद्वार से शिव भक्तों द्वारा लाई गई कांवड़ अर्पित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि मंदिर में शिव भक्तों के हर-हर महादेव के जयकारे गुंजायमान होने लगे है। दूसरी ओर महाशिवरात्रि के मौके पर सत्यनारायण मंदिर गुढा, शिव मंदिर उन्हाणी, शिव मंदिर कनीना, धनौंदा सहित विभिन्न मंदिरों में शिव भक्तों द्वारा जलाभिषेक किया जाएगा।

पीजी कॉलेज में आगाज -ए -बसंत का समापन, विज्ञान की देवी सरस्वती की पूजा

बेस्ट नायिका सवयंवी और बेस्ट नायक का खिताब अमन ने जीता

ज्ञान, संगीत, कला और कला का संगम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

राजकीय महाविद्यालय में दो दिवसीय आगाज़-ए-बसंत उत्सव का समापन शनिवार को हो गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर राजवीर सिंह ने की। समारोह में मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी प्रोफेसर डॉ पूर्ण प्रभा रहीं। विशिष्ट अतिथि दुर्गा शक्ति प्रभारी इंस्पेक्टर मिनाक्षी शर्मा और एसएचओ विमला देवी रही। अतिथियों के कॉलेज में पहुंचने पर प्राचार्य और उप प्राचार्य डॉ हवा सिंह और सिनियर काउंसिल मैंबर ने पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ पूर्ण प्रभा ने विधार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बसंत पंचमी भारत में हर साल बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाने वाला त्योहार है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आरंभ का प्रतीक है और ज्ञान, संगीत, कला और विज्ञान की देवी सरस्वती को समर्पित है। सरस्वती मां ज्ञान और बुद्धि का आशीर्वाद देती हैं, इसलिए यह विद्यार्थियों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए प्रार्थना करने और सफल शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने का एक शुभ अवसर है। प्राचार्य प्रोफेसर राजवीर सिंह ने विद्यार्थियों को बताया कि शैक्षणिक गतिविधियों के साथ सांस्कृतिक और खेल कूद की गतिविधियों में हिस्सा में बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए, जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने ने कहा कि बसंत उत्सव भारत के विभिन्न हिस्सों में अनूठी परंपराओं को जिवंत करने और भारतीय संस्कृति व रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रभारी मीना और प्रियंका शर्मा ने स्टेज संचालन किया।

नारनौल। कार्यक्रम में प्रस्तुति देती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

डांस प्रतियोगिता में दिखा उत्साह

कार्यक्रम की प्रभारी मीना ने बताया कि आगाज़ ए बसंत उत्सव कार्यक्रम में विजुअल आर्ट की विधाओं को डॉ प्रियंका शर्मा और डॉ वैनिका शर्मा के दिशा-निर्देशों में पोस्टर मेकिंग, पेंटिंग मेकिंग रंगोली जबकि प्रोफेसर डॉ नरेश कुमार यादव डॉ मंजू रानी, डॉ पारुल यादव के सानिध्य में परफॉर्मिंग आर्ट विधाओं में एकल डांस, गीत मिमिकरी, स्किट आदि का विधार्थियों द्वारा अपनी प्रस्तुतियों दी। कॉलेज प्रेस प्रवक्ता प्रोफेसर डॉ चंद्रमोहन ने बताया कि दो दिन के इस बसंत उत्सव में पूरे कॉलेज परिसर में बसंती रंगों व लोक-संस्कृति की छटा देखने को मिली। सभी इस दो दिवसीय आगाज़-ए-बसंत उत्सव के सभी प्रतिभागियों में बेस्ट नायिका सवयंवीं कुमारी और बेस्ट नायक अमन कुमार रहा। विजेताओं को मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों और महाविद्यालय की सिनियर काउंसिल मैंबर के करकमलों से पारितोषिक और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया।

खबर संक्षेप

विद्या भारती स्कूल ने मनाया महाशिव रात्रि वर्ष

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में शनिवार को महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। इसका शुभारंभ भगवान शिव की विधिवत पूजा एवं आरती से हुआ। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव एवं वाइस चेयरपर्सन डा. उषा यादव ने शिवजी की आरती कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में संस्था प्रबंध निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव व निदेशक डा. रविन्द्रा यादव ने बच्चों को प्रसाद वितरण किया। विद्यालय की किड्स ब्लाक की इंचार्ज विजय सोनी ने विद्यार्थियों को महाशिवरात्रि के महत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

आकाश एकेडमी के विद्यार्थियों ने परीक्षा में लिया हिस्सा

महेंद्रगढ़। आकाश एकेडमी के होनहार विद्यार्थियों ने नेशनल फाउंडेशन ओलंपियाड की परीक्षा में शामिल होकर खुशी का इजहार किया है। नेशनल ओलंपियाड का मुख्य उद्देश्य देश के कोने-कोने में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को एक ऐसा सशक्त और विश्वसनीय मंच प्रदान करना है, जहां वे केवल अपने विद्यालय तक सीमित रहकर नहीं, बल्कि देशभर के विद्यार्थियों के बीच अपनी वास्तविक स्थिति को समझ सकें। यह मंच विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में स्वयं को परखने, अपनी क्षमताओं को पहचानने और आने वाली शैक्षणिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों के लिए आत्मविश्वास के साथ तैयार होने का अवसर प्रदान करता है। लेवल एक की परीक्षा प्रक्रिया के समापन के बाद परिणाम घोषित किया, जिसमें आकाश एकेडमी के 11 छात्रों ने सफलता प्राप्त की थी।

दा वेदांता स्कूल में स्कॉलरशिप टेस्ट आयोजित

नारनौल। दा वेदांता इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को आयोजित स्कॉलरशिप टेस्ट एवं अभिभावक काउंसलिंग सत्र संपन्न हो गया। इस शैक्षिक आयोजन में विद्यालय के मौजूदा विद्यार्थियों ने भाग लिया। स्कॉलरशिप टेस्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रतिभा को पहचानना तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। स्कॉलरशिप टेस्ट के पश्चात विद्यालय परिसर में अभिभावक काउंसलिंग सत्र का आयोजन किया गया, जिसका विषय "डिजिटल युग में पेरेंटिंग की चुनौतियां" रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में आरबीएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन रेवाड़ी की प्राचार्या डॉ. कुसुम यादवउपस्थित रही।

इंडस स्कूल में खेलकूद प्रतियोगिता का समापन

महेंद्रगढ़। इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौंगड़ा अहीर में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का समापन हो गया हैं। कार्यक्रम में दूसरे दिन के मुख्यातिथि राजकीय स्कूल के सेवानिवृत्त प्राचार्य वीरेंद्र सिंह रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत गीत से हुआ, जिसमें विद्यालय की छात्राओं ने मनमोहक प्रस्तुति देकर सभी अभिभावकों और अतिथियों का स्वागत किया। खेलकूद प्रतियोगिता में विभिन्न रोमांचक प्रतियोगिता आयोजित की गईं। सबसे पहले 400 मीटर लड़कों की दौड़ तथा 200 मीटर लड़कियों की दौड़ हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने शानदार प्रदर्शन किया। इसके अलावा कबड्डी, वॉलीबॉल मैच, रस्साकसी प्रतियोगिता तथा शिक्षकों की विशेष रस्साकसी प्रतियोगिता भी आकर्षण का केंद्र रही। सभी प्रतिभागियों ने खेल भावना का परिचय देते हुए उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्यातिथि वीरेंद्र सिंह ने कहा कि खेल शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन और स्टाफ की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में आत्मविश्वास, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं। कार्यक्रम के अंत में विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। संस्था चेयरमैन धर्मेंद्र यादव ने मुख्यातिथि, डीपीई स्टाफ, सभी शिक्षकों एवं अभिभावकों का आभार व्यक्त किया।

युवाओं में संस्कारों का समावेश करना जरूरी

नांगल चौधरी। सरस्वती पब्लिक स्कूल भोजावास में फेयरवेल समारोह प्राचार्य राजेश कुमार की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें संस्था के चेयरमैन दयाराम यादव तथा प्रबंधक निदेशक अमित यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता और उत्तम संस्कारों के समावेश के लिए प्रेरित किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने नशाखोरी के दुष्प्रभावों पर आधारित नाटक व भाषण प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने कहा कि किताबों में सामाजिक अनुभव का समावेश नहीं होता, इसलिए युवाओं को सामाजिक गतिविधियों में रूझान बढ़ाना अनिवार्य है। लेकिन बीते 15-20 सालों से पश्चिमी देशों की संस्कृति का प्रभाव बढ़ने से समाज में अपराधिक गतिविधियों का ग्राफ बढ़ गया। युवाओं में अश्लीलता बढ़ने से सामाजिक ताना-बाना खराब होने का खतरा बढ़ गया है। समाधान के लिए शिक्षण संस्थाओं को किताबी पढ़ाई के साथ भारतीय संस्कृति और सौम्य संस्कारों के अध्यापन को प्राथमिकता देनी होगी।

अहीर कॉलेज में हेल्थ एंड हाईजीन पर व्याख्यान का आयोजन

रेवाड़ी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता का स्वागत करते शिक्षक।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

अहीर महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ व लैंगिक उत्पीड़न रोकथाम समिति के संयुक्त तत्वावधान में हेल्थ एंड हाईजीन विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता एएसएमओ डा. तेजस्वी यादव भाड़ावास पीएससी रही। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डा. उर्मिला शर्मा ने किया। प्राचार्या ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है,यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो हर कार्य को ऊजार्वान ढंग से कर सकता है। डा.तेजस्वी यादव ने विद्यार्थियों को डब्ल्यूएचओ की ओर से निर्धारित स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां दी। उन्होंने बताया कि यदि हम दिन में व्यायाम करते हैं, पैदल चलते हैं, या अन्य कोई भी क्रियात्मक गतिविधि करते हैं तो उससे हमारा शरीर स्वस्थ बना रहता है। उन्होंने बताया कि लगातार फोन या लैपटॉप स्क्रीन देखने से आंखों पर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि हमें दूसरों के साथ सकारात्मक व्यवहार करना चाहिए और हमें अपनी बातें अपने मित्र पड़ोसी किसी भी भरोसेमंद व्यक्ति से जरूर साझा करनी चाहिए। कार्यक्रम प्रभारी डा. संगीता राव ने अतिथियों को आभार व्यक्त किया। डा. नवीन तवंर ने विद्यार्थियों से मिली जानकारीयों का अनुसरण करने की सलाह दी। इस मौके पर लैंगिक उत्पीड़न रोकथाम समिति तथा आंतरिक शिकायत समिति के संयुक्त तत्वावधान में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों ने महिला उत्पीड़न के निवारण तथा महिलाओं को सुरक्षित समाज दिलाने के लिए हस्ताक्षर कर शपथ ग्रहण की।

विदाई समारोह में छात्र सम्मानित

नारनौल। शहर के मौहल्ला चैधरीयान स्थित हरियाणा सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में शनिवार बारहवीं कक्षा का विदाई समारोह आयोजन किया गया। इस दौरान कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को विदाई दी। समारोह का शुभारम्भ संस्था चेयरमैन हितेन्द्र शेखर शर्मा व निदेशिका संगीता शर्मा ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मंच संचालन जूनियर विद्यार्थियों ने किया। ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों ने बारहवीं कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी खूबियों के अनुसार टाइटल देते हुए उपहार भेंट किए। बारहवीं कक्षा के छात्रों में से विज्ञान संकाय से वंशिका और हेमन्त, वाणिज्य संकाय से करूणा और हर्ष सैनी, कला संकाय से जीया एवं योगेश मिस्टर और मिस फेयरवेल चुना गया। विद्यालय चेयरमैन हितेन्द्र शर्मा व निदेशिका संगीता शर्मा ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन हर एक के लिए अहम पड़ाव होता है। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ समाज, राष्ट्र व अन्य गतिविधियों की जानकारी मिलती है।

रेवाड़ी। कार्यक्रम में अतिथियों का सम्मान करते शिक्षक।

विद्यार्थियों ने वार्षिकोत्सव में दिखाई प्रतिभा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रही धूम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खोरी

पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी का वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद राव राघवेंद्र थे,जबकि भाजपा नेता डा. अरविंद यादव, जिला शिक्षा अधिकारी विजेंद्र हुड्डा, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी प्रदीप दहिया, जिला परियोजना संयोजक संतोष तंवर, समाजसेवी यशु चेयरमैन, खंड शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार, राजबीर ठेकेदार और सरपंच प्रतिनिधि सतबीर ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। प्राचार्य ब्रह्मप्रकाश यादव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। छात्र-छात्राओं ने हरियाणवी लोक नृत्य, देशभक्ति गीतों और सामाजिक संदेश पर आधारित नाटक के माध्यम से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। इस मौके पर राव राघवेंद्र और डीईओ बिजेंद्र हुड्डा ने कहा कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि सर्वांगीण विकास ही जीवन का असली आधार है।

प्राचार्य ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस मौके पर माजरा स्कूल प्रिंसिपल संतोष कुमारी, प्रिंसिपल अजय यादव, राजपुरा स्कूल मुखिया संतोष देवी, अध्यापक ईश्वर सिंह, जसवंत सिंह, रणजीत सिंह, मंजू देवी, रमा देवी, बंटी देवी, पूजा देवी, सुधीर यादव व अध्यापिका अंजू देवी सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे। मंच संचालन अजीत सिंह और निशा देवी ने किया।

रेवाड़ी। स्थापना दिवस पर हवन करते हुए शिक्षक व विद्यार्थी।

ज्ञानदीप स्कूल के स्थापना दिवस पर हवन किया

रेवाड़ी। शनिवार को मोहनुपर स्थित ज्ञानदीप स्कूल में स्थापना दिवस के अवसर पर हवन और पूजा का आयोजन किया गया। विद्यालय के ऑनर अरुण कुमार सहित प्रधानाचार्य, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थियों ने हवन में आहूति डाली। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। इस मौके पर स्कूल संचालक अरुण ने कहा कि विद्यालय केवल शैक्षणिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि संस्कार, अनुशासन तथा नैतिक मूल्यों के विकास का भी केंद्र है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करने तथा सकारात्मक जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यालय की सांस्कृतिक धरोहर को मजबूत बनाते हैं। इस मौके पर स्कूल स्टाफ सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

आगामी सप्ताह में मौसम में बदलाव की संभावना, बूंदाबांदी व हल्की बरसात होने का अनुमान

दो डिग्री फिर चढ़ा दिन का पारा, रात के तापमान में आई गिरावट

- इस साल सर्दी का सीजन शुरू होने के बाद से ही कोहरे और पाला का प्रकोप कम रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

फरवरी माह के लगते ही दिन के समय सर्दी का असर नहीं दिख रहा है। पिछले 15 दिन से दिन व रात के तापमान में उतार-चढ़ाव चल रहा है। गर्म कपड़ों की आवश्यकता अब सुबह और शाम के समय ही महसूस होती है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार आगामी सप्ताह में एक बार फिर से मौसम में बदलाव आने की संभावना है। आसमान में आंशिक या घने बादल छा सकते हैं। इस बीच बूंदाबांदी व हल्की बरसात होने की संभावना भी जताई जा रही है। शनिवार को सुबह से ही आसमान साफ रहने व तेज धूप ने ठंड का असर खत्म कर दिया। दोपहर तक गर्म कपड़े बदन को चुभने शुरू हो गए। अधिकतम तापमान 2.0 डिग्री की वृद्धि के साथ 27.0 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जबकि न्यूनतम तापमान 1.0 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के साथ 6.0 डिग्री पर आ गया। मौसम को देखते हुए तापमान सामान्य से 2.0 डिग्री सेल्सियस तक ज्यादा बना हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार कमजोर विक्षोभ की सक्रियता के चलते आगामी सप्ताह में आसमान में आंशिक या घने बादल छा सकते हैं। लगातार दो दिन तक मौसम इसी तरह का बना रह सकता है। इस दौरान बूंदाबांदी भी हो सकती है। अगर बूंदाबांदी होती है, तो इससे ठंड एक बार फिर वापसी कर सकती है। इस साल सर्दी का सीजन शुरू होने के बाद से ही कोहरे और पाला का प्रकोप कम ही रहा।

मौसम गर्म होने से गेहूं की फसल को नुकसान

मौसम ने इस बार किसानों का पूरा साथ दिया है। सही समय पर हल्की बरसात होने से सरसों और गेहूं की फसलों को काफी फायदा मिला है। पाले से भी इस बार फसलों को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है। सरसों की अगेती फसल पककर तैयार होने लगी है। गेहूं की फसल में भी दाना बनना शुरू हो गया है। दिन के समय मौसम का गर्म मिजाज गेहूं की फसल को नुकसान पहुंचा सकता है। इससे दीमक जमीन से बाहर निकलकर फसल पर हमला कर सकती है। दीमक का प्रकोप गेहूं की फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है।

खबर संक्षेप

मिलिट्री स्कूल में चयन होने पर लक्ष्य सम्मानित

रेवाड़ी। बिठवाना चौक स्थित बीआर सैनिक स्कूल अकादमी के छात्र व न्यू आदर्श नगर निवासी लक्ष्य तंवर ने राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल की प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर क्षेत्र और संस्थान का नाम रोशन किया है। दिसंबर में आयोजित हुई परीक्षा में अकादमी के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। संस्थान के संचालक आरएस यादव ने बताया कि छात्र लक्ष्य काफी होनहार है और उसने आज राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल की परीक्षा पास करके अन्य छात्रों को भी सफलता की राह दिखाई है। शनिवार को अकादमी में लक्ष्य को सम्मानि किया गया। अकादमी की संचालिका बबीता यादव ने लक्ष्य सहित उसके माता-पिता का अभिनंदन किया।

खच्चर रेहड़ी के नीचे दबने से व्यक्ति की मौत

कोसली। बिसोहा गांव के एक व्यक्ति की खच्चर रेहड़ी के नीचे दबने से मौत हो गई। मृतक राजू के भतीजे राकेश कुमार ने नाहड़ चौंकी पुलिस को बताया कि शुक्रवार को उसका चाचा राजू लक्ष्मी भट्ठा लूखी पर कच्ची ईंटें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा रहा था कि अचानक खच्चर बेकाबू हो गया और खच्चर गाड़ी उलट गई। खच्चर गाड़ी पर बैठी उनकी मां दूसरी दिशा में गिर गई तथा चाचा राजू गाड़ी के नीचे आ गया। बेकाबू खच्चर ने राजू के सिर पर पैरों से चोट मारी। परिजन उन्हें नाहड़ अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उनके चाचा को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के शव का कोसली अस्पताल में पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

खेल नर्सरी के लिए आवेदन का अंतिम दिन आज

रेवाड़ी। हरियाणा में खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खेल विभाग की ओर से सरकारी स्कूल, ग्राम पंचायत व निजी शिक्षण संस्थानों में खेल नर्सरियां स्थापित की जाएंगी। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि खेल नर्सरी योजना 2026-27 के तहत आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इच्छुक संस्थान 15 फरवरी तक विभागीय वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि खेल नर्सरी के लिए केवल ओलंपिक, एशियन और कॉमनवेल्थ खेलों में सम्मिलित चुनिंदा खेलों के लिए ही नर्सरियां खोली जाएंगी। इच्छुक संस्थान 15 फरवरी तक विभाग की वेबसाइट हरियाणास्पोर्टस.जीओवी.इन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

महाशिवरात्रि को लेकर शहर के सभी मंदिर लाइटों व फूलों से सजे

आज धूमधाम से मनाया जाएगा महाशिवरात्रि का पर्व, शिवालयों में गूजेंगे भोले के जयकारे

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

जिले में रविवार को महाशिवरात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। श्रद्धालु अपनी इच्छा से व्रत रखते हुए शिवालयों में जलाभिषेक करेंगे। भगवान शिव को समर्पित महाशिवरात्रि पर्व को लेकर शहर के मंदिरों में तैयारियां कर ली गई है। मंदिरों को आकर्षक लाइटों व फूलों से सजाया गया है। महाशिवरात्रि को लेकर मोती चौक स्थित प्राचीन घंटेश्वर महादेव मंदिर, शिव चौक स्थित शिव प्रतिमा, सोलहराही स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर, नई अनाजमंडी स्थित शिव मंदिर व भाड़ावास रोड स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर सहित सभी शिव मंदिरों में आयोजन की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए मंदिर प्रबंधन ने पूरी व्यवस्था कर ली है। मंदिरों में व्यवस्था बनाने के लिए पुलिस प्रशासन की ओर से पुलिसकर्मियों की ड्यूटी भी लगाई गई है।

रेवाड़ी। महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर सजी शिव चौक स्थित भोले की प्रतिमा तथा महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सजाया गया प्राचीन घंटेश्वर महादेव मंदिर। फोटो : हरिभूमि

महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक करना विशेष फलदाई

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी 15 फरवरी को श्रीमहाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन सर्वार्थि सिद्धियोग सूर्योदय से रात्रि 7:47 तक रहेगा। ज्योतिषाचार्य अजय शास्त्री ने बताया कि प्रदोष तथा निशीथकाल में चतुर्दशी प्राप्त होने से महाशिवरात्रि व्रत होगा। ज्योतिषाचार्य शास्त्री ने कहा कि शिव पुराण में बताया गया है कि महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक करना विशेष फलदाई है। सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवा शिवात्मका अर्थात सभी देवताओं की आत्मा में रुद्र उपस्थित है और सभी देवता रुद्र की आत्मा में हैं। रुद्र सर्वशक्तिमान है। रुद्राभिषेक में भगवान शिव के रुद्र अवतार की पूजा होती है। यह भगवान शिव का प्रचंड रूप है, जोकि समस्त ग्रह बाधाओं और समस्याओं का नाश करता है। ज्योतिषाचार्य ने कहा कि स्वर्णम् कोटि गुणं महम अर्थात सोने के शिवलिंग से भी करोड़ गुना पारद शिवलिंग का महत्व है। पारद शिवलिंग, नर्मदेश्वर व पार्थिव शिवलिंग बनाकर घर में भी रुद्राभिषेक कर सकते है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान भोलेनाथ को जल,पंचामृत, बेलपत्र, भांग, आंकड़ा, धतूरा व शमी पत्ती चढ़ाना बेहद शुभ माना जाता है।

मंदिरों में शिव संकीर्तन भी होगा

महाहशिवरात्रि पर श्रद्धालु व्रत रखकर पूजन के साथ जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक व रुद्राभिषेक अनुष्ठान पूरे विधि-विधान के अनुसार करेंगे। मान्यता है कि ऐसा करने वाले श्रद्धालुओं की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। महाशिवरात्रि के पर्व पर शहर के विभिन्न क्षेत्रों में कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं की ओर से शिव संकीर्तन महोत्सव का आयोजन भी किया जा रहा है। महा शिवरात्रि में भोलेनाथ का गन्ने के रस से अभिषेक करने पर लक्ष्मी प्राप्ति, दूध से मनोकामनाएं पूर्ण, घी से आरोग्यता व वंश वृद्धि, इत्र युक्त जल से बीमारी नष्ट होती है। सरसों के तेल से शत्रु नाश, दही से भवन वाहन प्राप्ति तथा शहद युक्त जल से अभिषेक करने पर समस्त पापों का नाश होता है।

रेवाड़ी। शिविर के दौरान सफाई अभियान चलाते हुए विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

छात्रों को नैतिक मूल्यों और जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ⏭बावल

राजकीय कॉलेज बावल में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के चौथे दिन का ओम शांति बावल से अध्यात्मिक और ध्यान के क्षेत्र में प्रसिद्ध गीतमाला और बिंदु ने अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि ध्यान और अध्यात्म हमारे जीवन को सशक्त बनाते हैं और हमें समाज के प्रति जागरूक बनाते हैं। उन्होंने छात्रों को नैतिक मूल्यों और जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। एनएसएस बॉयज यूनिट की प्रभारी डा. नीतू सिंह ने कहा कि शिविर में छात्रों को नेतृत्व क्षमता, टीम वर्क और सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में सिखाया जा रहा है। कॉलेज का उद्देश्य है कि छात्र अपने कौशल को विकसित करें और समाज के लिए कुछ सकारात्मक करें। एनएसएस गर्ल्स यूनिट की प्रभारी डा. बबीता यादव ने कहा कि छात्राएं शिविर के माध्यम से सामाजिक सेवा के विभिन्न पहलुओं को सीख रही हैं और अपने व्यक्तित्व को विकसित कर रही हैं। कैंप के दौरान एनएसएस स्वयंसेवकों ने सफाई अभियान चलाया।

खास बातें

- ध्यान और अध्यात्म हमारे जीवन को सशक्त बनाते हैं और हमें समाज के प्रति जागरूक बनाते हैं
- छात्रों को नेतृत्व क्षमता, टीम वर्क और सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में सिखाया जा रहा
- छात्राएं शिविर के माध्यम से सामाजिक सेवा के विभिन्न पहलुओं को सीख रही हैं और अपने व्यक्तित्व को विकसित कर रही

अनुसुचित जाति, लघु एवं सीमांत और महिला किसानों को कृषि यंत्रों पर मिलेगा 50 प्रतिशत अनुदान

कृषि यंत्रों पर अनुदान लेने के लिए किसान 16 फरवरी तक कर सकते हैं आवेदन

- एक परिवार पहचान पत्र में से केवल एक किसान एक कृषि यंत्र पर ही अनुदान का लाभ ले सकता है
- ड्रा माध्यम से लाभार्थियों का चयन किया जाएगा

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग हरियाणा की ओर से कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आरकेवीवाई स्कीम के स्मैम मद के तहत कृषि यंत्रों पर अनुदान दिया जा रहा है। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि किसान योजना का लाभ उठाने के लिए 16 फरवरी तक कृषि विभाग की वेबसाइट एग्रीहरियाणा.जीओवी.इन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कृषि विभाग के उप निदेशक डा. जितेंद्र अहलावत ने बताया कि वे किसान जो मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर सीजन रबी 2024 एवं खरीफ 2025 में पंजीकृत है, वे ही इस स्कीम में आवेदन के लिए पात्र होंगे। एक परिवार पहचान पत्र में से केवल एक किसान एक कृषि यंत्र पर ही अनुदान का लाभ ले सकता है। अनुसूचित जाति/लघु एवं सीमांत/महिला किसानों को 50 प्रतिशत व अन्य किसानों को 40 प्रतिशत तक का अनुदान दिया जाएगा। लघु एवं सीमांत श्रेणी का लाभ किसानों को उनके मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकृत जमीन के आधार पर दिया जाएगा।

डीसी अभिषेक मीणा।

सहायक कृषि अभियंता इंजी. दिनेश शर्मा ने बताया कि स्कीम के तहत विभिन्न कृषि यंत्रों जैसे बैटरी/इलेक्ट्रिक/सोलर ऑपरेटिड पावर वीडर, राइड ऑन सेल्फ प्रोपेल्ड मल्टी टूलबार, सेल्फ प्रोपेल्ड हाईक्लीयरंश बूम स्प्रेयर, हाई कैपेसिटी चाफकटर लोडर के साथ, ट्रैक्टर ऑपरेटिड साइलेज पैकिंग मशीन/बेलर, बैटरी ऑपरेटर फर्टिलाइजर ब्राडकास्टर, ट्रैक्टर ऑपरेटिड फर्टिलाइजर ब्राडकास्टर, ट्रैक्टर ऑपरेटिड हाइड्रोलिक प्रेस स्ट्रा बेलर, सब सॉयलर, मल्टीक्रोप बेड प्लांटर/रेज्ड बेड प्लांटर, सेल्फ प्रोपेल्ड राइस ट्रांसप्लांटर, विनोविंग फैन, मिलेट मशीन/मिलेट मील, मेज थ्रेशर/मैज सलैसर, न्यूमैटिक प्लांटर, ऑयल एक्सपेलर, शुगर केन थ्रेस कटर 75 इंच साइज, मोबाइल/कॉटन श्रेडर, काऊ डंग ब्रिकेट मशीन, काऊ डंग डीवाटरिंग मशीन, पैडी मोबाइल ड्रायर, लेजर लैंड लेवलर, रोटावेटर, ट्रैक्टर माउंटिड पावर वीडर, आलू बोने की मशीन इत्यादि पर अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। सहायक कृषि अभियंता ने बताया कि ऑनलाइन आवेदन के लिए किसान के नाम हरियाणा राज्य में पंजीकृत ट्रैक्टर की वैध आरसी, बैंक खाता, पैन कार्ड, परिवार पहचान पत्र व आधार कार्ड होना चाहिए। यदि कोई किसान अनुसूचित जाति से संबंध रखता है तो उसे अनुसूचित जाति प्रमाण पत्र देना होगा। आवेदन करने वाले किसान को खेत में फसल अवशेष नहीं जलाने बारे, पिछले 3 वर्षों में उसी कृषि यंत्र पर अनुदान न लेने बारे शपथ पत्र भी देना होगा। यदि आवेदनों की संख्या निर्धारित लक्ष्य से अधिक होती है, तो डीसी की अध्यक्षता में गठित कमेटी की ओर से ड्रा माध्यम से लाभार्थियों का चयन किया जाएगा।

विदाई समारोह में रवि बने मिस्टर व दीपिका को मिस फेयरवेल का खिताब

रेवाड़ी। मिस्टर व मिस फेयरवेल शिक्षकों के साथ। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

विवेकानंद पब्लिक स्कूल लाखनौर में बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोह का आयोजन धूमधाम से किया गया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को कॉलेज लाइफ के बारे में बताते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों ने 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को गिफ्ट तथा मोमेंटो देकर उनके प्रति अपना स्नेह व्यक्त किया। विद्यार्थियों की ओर से बैलून डांस, म्यूजिकल चेयर व रैम्प वॉक सहित अनेक मनोरंजक गेम्स का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने शिक्षकों को स्वामी विवेकानंद का प्रतिरूप भेंट कर विद्यालय के प्रति अपनी भावनाओं को उजागर किया।

- विद्यार्थियों की ओर से बैलून डांस, म्यूजिकल चेयर व रैम्प वॉक सहित अनेक मनोरंजक गेम्स का आयोजन किया गया
- स्कूल निदेशक ने बच्चों का मनोबल बढ़ाया

कार्यक्रम में 12वीं कक्षा के छात्र रवि को मिस्टर फेयरवेल व छात्रा दीपिका को मिस फेयरवेल का टाईटल दिया गया। स्कूल निदेशक एडवोकेट सुधीर यादव ने बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें इसी तरह आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

महाशिवरात्रि पर मेला, कुश्ती दंगल व होली गायन आज

रेवाड़ी। गांव छुरियावास में महाशिवरात्रि पर्व पर शिव मंदिर परिसर में मेले के साथ ही हवन, होली गायन प्रतियोगिता और कुश्ती दंगल कराया जाएगा। हवन के बाद भंडारा भी आयोजित किया जाएगा। मंदिर कमेटी के प्रधान रघुवीर सिंह और सरपंच नीलम यादव ने बताया कि कार्यक्रमों का आयोजन समस्त ग्रामवासी, पंचायत और मंदिर कमेटी संयुक्त रूप से कर रही हैं। मुख्य अतिथि बावल विधायक डा. कृष्ण कुमार विजेताओं को पुरस्कृत करेंगे। समापन कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष डा. वंदना पोपली, विशिष्ट अतिथि समाजसेवी अनिल रायपुर, जिला पार्षद मनीराम यादव, विशेष आमंत्रित अतिथि डीएसपी पवन यादव और रतनलाल एसएचओ मॉडल टाउन होंगे। सरपंच ने बताया कि मेले का शुभारंभ हवन और होली गायन प्रतियोगिता के साथ होगा। दोपहर बाद कुश्ती दंगल कराया जाएगा।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

रेवाड़ी। नेशनल साइंस सेंटर में भ्रमण करते विद्यार्थी व शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

सीहा स्कूल के छात्रों ने की नेशनल साइंस सेंटर की शैक्षणिक यात्रा

रेवाड़ी। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा के बीआईएस क्लब के करीब दो दर्जन विद्यार्थियों ने दिल्ली स्थित नेशनल साइंस सेंटर की शैक्षणिक यात्रा का लाभ उठाया। क्लब के अध्यक्ष भौतिकी प्राध्यापक हरीश कुमार ने बताया कि भारत मानक ब्यूरो के अधिकारी गौरव तथा जिला समन्वयक वीरेंद्र यादव के संयोजन में आयोजित शैक्षणिक यात्रा में विद्यार्थियों ने दिल्ली स्थित भारतीय विज्ञान केंद्र में प्रदर्शित की गई विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों के अलावा विज्ञान के विभिन्न रोचक प्रारूपों की जानकारी ली। यात्रा में प्राध्यापिका प्रियंका व रेखा भी शामिल रही। विद्यालय के डा. सीवी रमन साइंस क्लब के संरक्षक एवं प्राचार्य सत्यवीर नाहड़िया ने शैक्षणिक यात्रा के लिए भारत मानक ब्यूरो का आभार व्यक्त किया।

पुलिस टीम ने शनिवार को एक नशा पीड़ित को डी एडिक्शन सेंटर में कराया भर्ती, अब तक 67 का करा चुकी इलाज

हरिभूमि न्यूज ⏭कोसली

जिला पुलिस की नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को निरीक्षक रामपाल के नेतृत्व में गांव कृष्णा नगर, सुरेहली व झाड़ौदा में ग्रामीणों के साथ बैठक कर गांवों को नशा मुक्त करने तथा युवाओं को नशे से दूर रखने को लेकर विचार-विमर्श किया। नशामुक्ति टीम ने शनिवार को एक नशा पीड़ति व्यक्ति की काउंसलिंग कराकर डी एडिक्शन सेंटर में भी भर्ती कराया। नशा मुक्ति टीम ने अब तक नशे से पीड़ति 231 लोगों की पहचान की है तथा 67 नशा पीड़ितों का इलाज कराया है।

निरीक्षक रामपाल ने कहा कि पुलिस और आमजन अगर आपस में तालमेल के साथ कार्य करें तो नशे जैसी बुराई पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

नशा एक ऐसी बुराई है, जिससे व्यक्ति का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशा करने वाला व्यक्ति अपने साथ साथ पूरे परिवार का जीवन खराब कर देता है।

उन्होंने कहा कि पुलिस के अभियान से प्रेरित होकर युवा शिक्षा और खेल गतिविधियों की ओर अग्रसर हो रहे हैं, वहीं पर अनेक नशा ग्रस्त युवकों ने नशा छोड़ने की पहल भी की है। उन्होंने कहा कि अगर किसी प्रकार की नशे संबंधी सूचना है कोई व्यक्ति नशे का प्रयोग करता है या नशे की सप्लाई इत्यादि करता है तो इस बारे पुलिस को मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 या 112 नंबर पर सूचित करे। उन्होंने गांव के नौजवानों और बच्चों से अपील करते हुए कहा कि वे नशे के विरुद्ध इस युद्ध में पुलिस का सहयोग करे।

गांव में किसी भी परिवार में कोई भी व्यक्ति नशे का सेवन करता है तो उसे नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करें, जिला पुलिस इसमें पूरा सहयोग करेगी।

पुलिस टीम ने ग्रामीणों को बताए नशे के दुष्प्रभाव, अभियान से जुड़ने की अपील

रेवाड़ी। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

साप्ताहिक एनएसएस शिविर का समापन

रेवाड़ी। शनिवार को शहीद दशरथ राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पीथड़ावास में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का समापन सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा पुरस्कार वितरण के साथ किया गया। शिविर के प्रभारी गणित प्राध्यापक यशवंत राव ने कैंप की सात दिनों की गतिविधियों की रिपोर्ट पेश की।विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए स्वच्छता रैली के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। समापन सत्र में प्राचार्य अजय कुमार यादव ने सभी स्वयंसेवकों को पुरस्कृत किया। विद्यार्थियों को आपसी मेलजोल से रहने व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य सुरेंद्र कुमार, प्राध्यापक रविंद्र कुमार यादव, बबरुभान और राजेंद्र सिंह उपस्थित थे।

जागरुकता सोशल मीडिया व फर्जी ऐप्स के माध्यम से निवेश कराकर की जा रही साइबर ठगी

अधिक मुनाफे के झांसे में न आएं नागरिक, क्रिप्टोकरेंसी निवेश पर बढ़ती साइबर ठगी से रहें सावधान : एसपी

हरिभूमि न्यूज ⏭रेवाड़ी

एसपी हेमेन्द्र कुमार मीणा ने आमजन से क्रिप्टोकरेंसी निवेश के नाम पर बढ़ते साइबर अपराधों से सतर्क रहने की अपील की है। एसपी ने बताया कि वर्तमान समय में साइबर ठग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, व्हाट्सएप, टेलीग्राम चैनलों, फर्जी वेबसाइटों और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से लोगों को अधिक मुनाफे का लालच देकर ठगी का शिकार बना रहे हैं। साइबर अपराधी स्वयं को क्रिप्टो एक्सपर्ट, निवेश सलाहकार अथवा किसी प्रतिष्ठित कंपनी का प्रतिनिधि बताकर लोगों से संपर्क करते हैं। प्रारंभ में कम राशि निवेश कर कृत्रिम रूप से मुनाफा दिखाया जाता है। अधिक राशि निवेश करने के लिए प्रेरित किया जाता है तथा बाद में ठग संपर्क तोड़ लेते हैं या टैक्स, चार्ज, वॉलेट अपग्रेड जैसे बहानों से लगातार धनराशि की मांग करते रहते हैं।

आमजन के लिए जरूरी सावधानियां

एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा।

बिना पूरी जानकारी एवं वैधानिक पुष्टि के किसी भी क्रिप्टो प्लेटफॉर्म में निवेश न करें। सोशल मीडिया या अनजान नंबरों से प्राप्त निवेश संबंधी लिंक, ऐप या कॉल से दूरी बनाए रखें। गारंटीड रिटर्न, रिस्क फ्री इनकम अथवा डबल पैसा जैसे दावों से सतर्क रहें। अपनी बैंक डिटेल, ओटीपी, यूपीआई पिन या क्रिप्टो वॉलेट से संबंधित जानकारी किसी के साथ साझा न करें। केवल प्रमाणिक एवं विश्वसनीय प्लेटफॉर्म का ही उपयोग करें। यदि कोई व्यक्ति क्रिप्टोकरेंसी निवेश के नाम पर साइबर ठगी का शिकार हो जाता है, तो तुरंत राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करे या साइबरक्राइम.जीओवी.इन पोर्टल पर अपनी शिकायत दर्ज कराए। एसपी मीणा ने कहा कि साइबर अपराधों पर पुलिस की कड़ी निगरानी है तथा ऐसे मामलों में संलिप्त आरोपियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। आमजन की सतर्कता ही साइबर ठगी से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है।

तेज रफ्तार से थका मन चाहे सुकून भरी स्लो लाइफ

पिछली एक सदी में तकनीकी विकास में क्रांति के साथ ही लोगों की जीवनशैली भी बहुत तेज रफ्तार वाली हो गई थी। लेकिन कोविड के बाद से लोगों की सोच बदलने लगी और जल्दी से सब कुछ पा लेने के बजाय जीवन में सुकून को तरजीह देने लगे हैं। यही वजह है कि पूरी दुनिया में अब लोग तेज रफ्तार से ऊबकर स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।

कवर स्टोरी

लोकमित्र गौतम

पूरी दुनिया में स्लो लाइफ या धीमे जीवन की ओर बढ़ने को आलस्य की निशानी नहीं बल्कि नई चेतना का पर्याय माना जा रहा है। वास्तव में स्लो लाइफ का मतलब काम को अधूरा छोड़ देना नहीं है। जीवनशैली से समझौता नहीं है और न ही स्लो लाइफ का मतलब घर में पड़े रहना है बल्कि स्लो लाइफ का मतलब है कम लेकिन अर्थपूर्ण काम करना। स्लो लाइफ का मतलब है डिजिटल डिवाइसेस से घिरे न रहना। बीच-बीच में पूरी तरह से डिजिटल डिटॉक्स होना। स्लो लाइफ का मतलब है स्थानीय जीवन का आनंद लेना और पारिवारिक जीवनशैली का लुत्फ उठाना। स्लो लाइफ का मतलब है, अपने पीढ़ियों पुराने व्यंजनों का आनंद लेना और प्रकृति से भरपूर जुड़ाव रखना। स्लो लाइफ का मतलब है रिश्तों की गुणवत्ता बढ़ाना, न कि उनकी संख्या बढ़ाना। और स्लो लाइफ का एक अंतिम मतलब है हर पल उपलब्ध होने की मजबूरी से मुक्त होना।

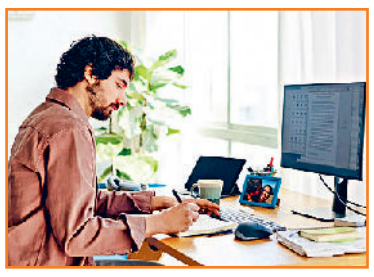

एक समय तक 'तेज रफ्तार' होना, रोमांच का सबब माना जाता था, कामयाबी की निशानी थी। इसलिए अधिकांश लोग तेज-तेज और तेज की तरफ पिछली लगभग एक सदी से दौड़ते रहे हैं। इस भागम-भाग में वाकई इंसान ने अपनी जिंदगी की रफ्तार बहुत तेज कर ली। फास्ट इंटरनेट, बुलेट ट्रेन, आवाज की गति से उड़ते हवाई जहाज, इंस्टेंट अपडेट और कुछ महीने या साल में ही करियर की बुलंदी छूना, ये सब इसी तेज रफ्तार के उदाहरण हैं। लेकिन बीते कुछ समय से अब अधिकतर इंसान इस तेज रफ्तार जिंदगी को रोमांच की बजाय आफत का सबब मानने लगे हैं। यही कारण है कि अब दुनिया, तेज रफ्तारी से रोमांचित नहीं है बल्कि स्लो लाइफ की तरकीबें खोज रही है। अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक आज स्लो लाइफ न्यू लाइफस्टाइल बन रही है, क्योंकि लोग मशीन बनने से थक चुके हैं, अब वे थोड़ा ठहरकर जीना चाहते हैं।

क्यों लौट रहे हैं धीमे की ओर: पूरी दुनिया में लोग स्लो लाइफ की तरफ लौट रहे हैं, तो इसकी वजह है कि पिछले कई दशकों के भागम-भाग के कारण परिवार की संरचना कमजोर होती जा रही है। फोन आपको किसी क्षण बेफिक्र नहीं होने देता, फुर्सत में नहीं रहने देता। नए-नए रेडीमेड पकवानों की कुछ मिनटों में सप्लाई ऐसे होने लगी है कि लोग अपने स्वाद का स्थाई सुख ही भूल गए हैं। नींद अब दुनिया की सबसे बड़ी नियामत बन चुकी है और सबसे बड़ी बात यह है कि इंसान खुद को ही भूलने लगा है। यही वजह है कि अब अमेरिका हो या एशिया, अफ्रीका और यूरोपीय देश के लोग परिवार के साथ समय बिताना चाहते हैं। कुछ घंटे या हफ्ते में एक दिन कम से कम बिना फोन के रहना चाहते हैं। कभी आराम से धीरे-धीरे पकाकर अपनी मनपसंद डिश खाना चाहते हैं और चाहते हैं कि कम से कम हफ्ते का एक दिन तो ऐसा हो, जब सोकर जगने का टाइमर सेट न हो। इस सबके बीच लोग अब अपने साथ भी कुछ घंटे, कुछ दिन बिताना चाहते हैं, इसलिए लोग तेज रफ्तार को छोड़कर धीमी और सुकून भरी जिंदगी की तरफ लौटना चाहते हैं।

स्लो लाइफ का सही मतलब: भले ही एक दौर में धीमी रफ्तार, आलस्य का पर्याय मानी जाती रही हो, लेकिन आज जब फास्ट लाइफ को विश्व स्वास्थ्य संगठन बर्नआउट और डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण बता रहा है, तब पहली बार जीवन के अस्थायीपन और नश्वरता से दो-चार हुए। यही वह समय था, जब बिना दफ्तर गए भी नौकरी कर सकने का विकल्प हासिल हुआ। जी हां, वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को बताया कि अगर दफ्तर न जाना पड़े तो भले एक घंटे ज्यादा भी काम करना पड़े, लेकिन दफ्तर के रास्ते के जोखिम, तनाव और अनुपयोगी समय से बच सकते हैं। कोविड ने लोगों को डिजिटली ओवरलोड कर दिया। लगातार मीटिंग्स, सोशल मीडिया की इंगेजमेंट और नोटिफिकेशंस का सिरदर्द लगातार पेशंस की परीक्षाएं लेती रही और अंततः लोग इस तेज रफ्तारी से आजीज आ गए।

शहरों से गांव की तरफ वापसी: पूरी 20वीं सदी में और 21वीं सदी के पहले लगभग दो दशकों तक पलायन का मतलब गांव से शहर की ओर जाना ही होता रहा है। लेकिन कोविड के बाद यूरोप में 16 प्रतिशत और अमेरिका में 6 प्रतिशत लोग शहर छोड़कर गांवों में बस गए। भारत में भी उच्च आयवर्ग के 2 प्रतिशत लोग न सिर्फ बड़े शहरों को छोड़कर अपनी जड़ों की ओर रहने के लिए लौटे बल्कि जो पारंपरिक रूप से अपने गांवों या पैतृक स्थानों में नहीं गए, वे भी तेज रफ्तार महानगरों को छोड़कर स्लो मोशन की जिंदगी वाले जंगलों, पहाड़ों के बीच में गांव या गांवनुमा कस्बों की ओर रुख कर गए। मेट्रो शहरों में डेढ़ से दो फीसदी लोग छोटे शहरों या कस्बों की तरफ लौटे। हालांकि भारत में शहरों से गांव की ओर वापसी का आंकड़ा लगभग न के बराबर रहा, क्योंकि भारत के गांव सामान्य सुख-सुविधा वाली जिंदगी के अनुकूल नहीं हैं। इसलिए भारत में बड़े लोग या तो पहाड़ों में बसे छोटे शहरों या कम औद्योगिक और धुर खेतिहर इलाकों के कस्बों की तरफ लौटे। कोविड के बाद ही लोगों ने अपनी छतों पर बागवानी का रोमांच महसूस करना शुरू किया। स्थानीय बाजारों की वापसी हुई, पारंपरिक जीवनशैली में योग और ध्यान की हिस्सेदारी बढ़ी और मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इससे लोगों ने नींद का सुख महसूस किया, खुद उगाकर सब्जियां खाईं तो स्वाद के साथ आत्मसंतोष महसूस किया, रिश्तों में स्थायित्व और हार्मोनल हेल्थ में बेहतरी का एहसास किया। इसलिए स्लो लाइफ की रेटिंग जो हमेशा फास्ट लाइफ से नीचे रहती थी, पहली बार उससे ऊपर हुई।

कुछ भ्रम भी टूटे: दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से ही पूरी दूनिया में यह मान लिया गया था कि स्लो लाइफ का मतलब है- धीमा उत्पादन, धीमा पूंजी निर्माण, मतलब गरीबी और बदहाली। लेकिन कोविड के दौरान और उसके बाद स्लो लाइफ का मतलब यह नहीं रहा। लोगों की सोच में बदलाव आया। कोविड के बाद की स्लो लाइफ ने दुनिया को दिखाया कि धीमे होने का मतलब नाकारा होना नहीं है। धीमे होने का मतलब अर्थव्यवस्था का नुकसान नहीं है और न ही धीमे होने का मतलब उत्पादनहीनता है। स्लो जीवनशैली ने ज्यादा संतुष्टि दी और बेचैन उपभोगवाद पर लगाम लगाया। सबसे बड़ी दौलत रिश्तों में आई गर्मजोशी से मिली। लब्बोलुआब यह कि लोगों को, मजबूरी और उदासीनता में शुरू की गई स्लो लाइफ रास आ गई और अब धीरे-धीरे इससे मोहब्बत बढ़ती ही जा रही है। *

स्लो लाइफ की तरफ धीरे-धीरे बढ़ने के तरीके

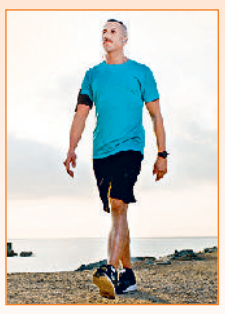

- हर दिन 30 मिनट किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रहें। चाहे टीवी की स्क्रीन हो, मोबाइल की या लैपटॉप की। इस दौरान फोन से नहीं, आस-पास की दुनिया से जुड़ें।
- सप्ताह में कम से कम एक दिन ऐसा रखें, जिसकी पहले से कोई प्लानिंग न हो। एक तरह से इस दिन को कुछ न करने की मस्ती का दिन बनाएं यानी नो प्लान डे।
- पैदल चलना सीखें। एक जमाने में आम आदमी हर दिन कम से कम 5-7 किलोमीटर पैदल चलता था। अब कई लोग ऐसे हैं, जो घर से बाहर सौ मीटर भी हर दिन पैदल नहीं चलते। अगर स्लो लाइफ का लुत्फ उठाना चाहते हैं तो फिर से पैदल चलने की तरफ लौटें। पैदल चलने से मन भी प्रसन्न रहता है और तन भी स्वस्थ रहता है।
- काम की सीमाएं तय करें। दिन में निश्चित घंटों तक ही काम करें और हर दिन के काम की एक मात्रा तय कर लें। यह नहीं कि जब तक जग रहे हैं, काम करते रहें।
- धीमी जिंदगी का रोमांच महसूस करने के लिए दुनिया से भले कम जुड़ें, पर अपने आपसे दोस्ती जरूर करें। खुद से दोस्ती करना भी एक अव्यक्त सुख की स्थिति में रहना है।

हयूमन नेचर

शैलेंद्र सिंह

आमतौर पर माना जाता है कि इंट्रोवर्ट स्वभाव के लोगों में आत्मविश्वास और योग्यता की कमी होती है। जबकि यह केवल अलग तरह की एक पर्सनालिटी होती है। इस पर्सनालिटी के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी हैं।

न तो वीकनेस-न ही बीमारी अलग होती है इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी

आधुनिक मुखर और सोशल मीडिया प्रधान समाज में अंतर्मुखी यानी इंट्रोवर्ट होना अकसर गलतफहमियों का विषय बन जाता है। जबकि अनेक वैज्ञानिक शोध यह साबित करते हैं कि अंतर्मुखी होना न तो किसी तरह की कोई कमजोरी है और न ही बीमारी। हांस आइजेंक के व्यक्तित्व सिद्धांत के मुताबिक अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होना व्यक्तियों में मस्तिष्क की उत्तेजना के अलग-अलग स्तरों का होना है। अंतर्मुखी लोगों का बेसलाइन पहले से अधिक होता है, इसलिए वे शोर, भीड़ और अत्यधिक सामाजिक उत्तेजना से जल्द थक जाते हैं। इसलिए वह बहिर्मुखी लोगों के विपरीत ऐसी तमाम स्थितियों में शांत और खुद तक सीमित रहते हैं। यह उनकी मात्र जैविक वास्तविकता होती है।

मुखर दौर में शांत लोग: आज के तेज आवाजों या शोरगुल से भरे दौर में कई बार अंतर्मुखी लोग खुद को हाशिए पर महसूस करने लगते हैं। लेकिन अगर अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शोधों की नजर से देखें तो अंतर्मुखी लोगों का यह हाशियाकरण उनकी अक्षमता नहीं बल्कि समाज की अपेक्षाओं का नतीजा है। इसलिए जेरोम कगन और हांस आइजेंक जैसे वैज्ञानिकों ने अपने शोध के जरिए साबित किया था कि अंतर्मुखी होना कोई ऐसा व्यवहार नहीं होता, जिसे लोग सीखें या उनमें वह परवरिश के कारण आए। इनके मुताबिक वास्तव में अंतर्मुखी होना एक किस्म की जैविक संरचना से जुड़ा तथ्य है, क्योंकि अंतर्मुखी लोगों का नर्वस सिस्टम दूसरे सामान्य लोगों के मुकाबले कहीं अधिक संवेदनशील होता है। लेकिन आधुनिक दौर में एक्सट्रोवर्ट यानी बहिर्मुखी लोगों को ही आदर्श मान लिया जाता है। इसके विपरीत इंट्रोवर्ट लोगों को महत्व और मान्यता नहीं दी जाती, जो महत्व और मान्यता बहिर्मुखी लोगों के खाते में आती है और इसकी शुरूआत बचपन से ही पहले घर में और फिर स्कूल में हो जाती है। वहां शांत रहने वाले बच्चों को उपेक्षित किया जाता है, भले ही वह कितना भी योग्य क्यों न हो। इसके बाद कॉर्पोरेट दफ्तरों में भी लीडर वही माना जाता है, जो ज्यादा बोलता हो और किसी भी तरह के मामले में त्वरित प्रतिक्रिया करता हो। जबकि कई बार संकट के समय अंतर्मुखी लोग ज्यादा बेहतर निर्णय लेते हैं। खासकर अगर वैज्ञानिकों, लेखकों आदि से जुड़ा कार्य हो। अडम ग्रांट ने अपने शोध से साबित किया कि प्रो-एक्टिव टीमों में अकसर ऐसे लीडर ज्यादा सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के फायदे: इंट्रोवर्ट पर्सनालिटी होने के कई फायदे होते हैं। जैसे-अंतर्मुखी लोगों में गहन सोच और निर्णय क्षमता होती है। ये किसी भी विषय पर अकसर जानकारियों को बहुत गहराई तक प्रोसेस करते हैं और जल्दी में निर्णय लेने से बचते हैं। इसलिए उनके निर्णय अधिकतर सफल, सुरक्षित और सुलझे हुए होते हैं। यही कारण है कि रचनात्मक और जटिल कामों में उनकी गुणवत्ता उच्च स्तर की होती है। ऐसे लोगों में सुनने और सहानुभूति की क्षमता बहिर्मुखी लोगों से ज्यादा होती है। अंतर्मुखी लोग बेहतर श्रोता होते हैं, जिससे रिश्तों में विश्वास और गहराई बनती है। टीम लीडरशिप में यह गुण सहकर्मियों के हुनर को बाहर निकालने में मदद करता है। अंतर्मुखी लोगों में अकेले में लंबे समय तक काम करने की क्षमता और फोकस में बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस कारण ऐसे लोग अनुसंधान, लेखन, डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में काफी सफल होते हैं।

इंट्रोवर्ट होने के नुकसान: इस स्वाभाव के कारण इन लोगों में कुछ खामियां भी देखी जाती हैं। मसलन- अकसर ऐसे लोग वर्बल नेटवर्किंग, पब्लिक फेसिंग जॉब्स, सेल्स या राजनीतिक भूमिकाओं में फिट नहीं बैठते। ऐसी जगहों में अव्वल तो ये आते ही नहीं और आते हैं तो सफल नहीं होते हैं। दुनिया में कई काम और कई गतिविधियां ऐसी होती हैं, जो खुले रूप से बातचीत और आत्मप्रचार को तरजीह देती हैं। इस मामले में ये कमजोर पड़ते हैं। कई अध्ययनों में यह सामने आया है कि ऐसे लोगों में अवसाद या अकेलेपन से घिरने का जोखिम बना रहता है। लेकिन यह सभी अंतर्मुखी लोगों के लिए सच नहीं होता। आज के मुखर युग में शांत या गंभीर रहना अकसर आत्मविश्वास की कमी समझ लिया जाता है। इसलिए आज के दौर में ऐसे लोग कई बार प्रमोशन पाने, मान्यता हासिल करने और सार्वजनिक मंचों पर अपनी कामयाब उपस्थिति बनाने में नाकाम रहते हैं। *

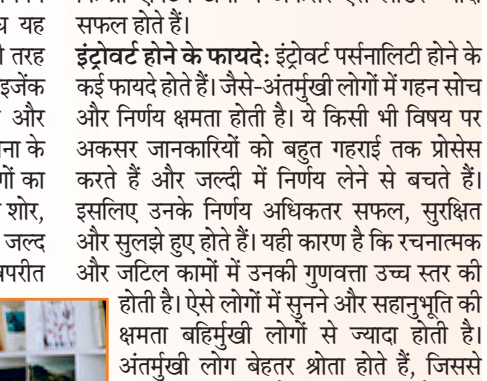

वासंती दोहे

घमंडीलाल अग्रवाल

टेसू की सरगम छिड़ी

धरती ने सज-धज किया, दुलहन-सा शृंगार।
पीत-वसन से झांकता, मानो पहला प्यार।।
जगा रही है कोकिला, मन में मीठी हूक।
गोरी पी की बाट में, बैठी बन कर मूक।।
भ्रमर सभी हैं पी रहे, फूलों का मकरंद।
पंचम सुर में गूंजते, खुशियों वाले छंद।।
धीमे-धीमे नशे में, पवन चले है खूब।
प्राणी-प्राणी जा रहा, अजब नशे में डूब।।
उर में जागी आग-सी, अंग-अंग उन्माद।
संग उन्हें भी आज लाए जा री सौतन याद।।
कण-कण से गायब हुआ, सर्दी का आतंक।
मुस्कानों ने पा लिए, सबसे ज्यादा अंक।।
धूप कुनमुनी डोलती, गरमाया परिवेश।
मधुर गंध का बांटता, हर उपवन संदेश।।
सरसों रानी पर चढ़ा, यों यौवन का रंग।
ठुमक-ठुमक कर बोलती, चली पिया के संग।।
बैरागी मन पूछता, किसका है यह खेल।
मौसम का जादू चला, फली प्रीति की बेल।।
टेसू की सरगम छिड़ी, महुआ के हैं ठाठ।
जरा देखिए खुल गई, फगुनाहट की हाट।।

व्यंग्य / अजय अनुरागी

अफसर की टांग

सुना था कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, लेकिन देखा यह भी गया है कि कुछ अफसरों की टांग भी बहुत लंबी होती है। ऐसे ही एक अफसर की टांग दूर तक पसरी रहती थी। वह बैठता इस कक्ष में था, और टांग उस कक्ष तक फैलाए रखता था। कार्यालय के जिस कक्ष में जाओ वहीं अफसर की टांग घूमती नजर आती थी। अफसर जहां नहीं पहुंच पाता था, वहां भी उसकी टांग पहुंच जाती थी। कई बार अफसर से पहले उसकी टांग उपस्थित रहा करती थी। लोग अफसर से कम उसकी टांग से ज्यादा परेशान रहा करते थे। अब अफसर की टांगों में घंटी कौन बांधे भला!

टांग अफसर से भी ज्यादा चालाक थी। किसी को पास फटकने नहीं देती थी। अफसर की अनुपस्थिति में अफसर की टांग शासन किया करती थी। लोग चाहते थे कि अफसर टांग को थोड़ा लूज करें, तो चैन की सांस आ सके। हालांकि अफसर छोटा-मोटा था, लेकिन उसकी टांग बहुत बड़ी थी। उसकी टांग भरोसे लायक तो थी ही नहीं, फिर भी उस पर भरोसा करना पड़ता था। वह चालाक था और दूसरों की टांग को अपने हित में इस्तेमाल करना जानता था। इसलिए लोग अफसर की टांगों से अपनी टांगें बचाते फिरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अफसर उनकी टांगों को अपनी टांगों में ना बदल डाले। अफसर टांग का बहुत कच्चा था, इसलिए अपनी टांग को हर जगह टांग कर ले जाता था। टांग के बिना कहीं जाता भी नहीं था। टांग ने इतना प्रभाव जमा लिया था कि अफसर प्रभावहीन होने लगा था। अफसर की दोनों टांगों की दो अलग-अलग परंपराएं थीं। मगर अफसर दोनों को साध लेता था। अकसर लोग अफसर की पहली टांग के भरोसे दूसरी टांग से धोखा खा बैठते थे।

अफसर की टांगों को लेकर लोगों में बड़ा कंफ्यूजन था। पता नहीं पड़ता था कि पहली कौन सी है और दूसरी कौन सी है? लोग जिसे पहली समझते थे, वह दूसरी निकलती थी। जिसे दूसरी समझते थे, वहां टांग होती ही नहीं थी। चालाक अफसर हर मुद्दे पर एक टांग को फंसा कर रखता था तथा दूसरी टांग को बचाकर रखता था। टांग विहीन अफसर नख-दंत विहीन शेर की तरह होता है, जो गुर्रा तो सकता है मगर दबोच नहीं सकता। वह अफसर ही क्या जिसके पास टांग न हो! वह टांग ही क्या जो अड़ना न जाने। अफसर की टांगों की करामात यह थी, कि पहली उठ जाती थी तो दूसरी बैठी रहती थी, और दूसरी उठ जाती थी तो पहली लेट जाती थी। अफसर चाहता था एक साथ, एक टांग, दो काम करती रहे, ताकि टांग की स्ट्रेटेजी कोई पकड़ ना पाए। टांग से परेशान लोग, टांग को उखाड़ फेंकने के लिए, एकजुट हुए। अंत में हुआ यह कि अफसर उखड़ गया, मगर उसकी टांगें नहीं उखड़ पाईं। *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

स्त्री के आंतरिक द्वंद्व की कहानियां

यह सही है कि बदलते समय के साथ परिवार और घर से बाहर भी स्त्री की भूमिका में बड़ा बदलाव आया है। मगर कमोबेश उसकी पीड़ा, घुटन और त्रासदियां अब तक नहीं बदलीं। हां, उसके रूप जरूर बदले हैं। वरिष्ठ लेखिका कल्पना मनोरमा ने अपने कहानी संग्रह 'एक दिन का सफर' में स्त्री के इसी बहुआयामी द्वंद्व को बड़ी बारीकी और मार्मिकता से उकेरा है। इन कहानियों में उन्होंने बेशुमार दबावों, तनावों से आहत स्त्री की पीड़ा को स्वर दिया है। संग्रह की कहानियां सशक्त होने के साथ ही समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक भी हैं। इसमें आज के दौर की महिलाओं के संघर्ष को भी देखा जा सकता है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'कितनी कैदें' के किरदार की घुटन, जैसे आत्मा को निर्ममता से छील कर लहूलुहान कर देती है। मर्यादा, इज्जत के नाम पर किस तरह बेटियां बिना अपराध के बलि पर चढ़ा दी जाती हैं, इस कटु सत्य को कहानी बड़े मार्मिक तरीके से बयां करती है। शीर्षक कहानी 'एक दिन का सफर' में नायिका के भीतर का द्वंद्व उसका अपना नहीं है। यह स्त्री का सामूहिक द्वंद्व है। वही द्वंद्व, जिसका सामना उसे बाहर-भीतर हर कहीं करना होता है। 'आखिरी सिगरेट' दांपत्य जीवन में प्रेम की लालसा में घुटती एक स्त्री मन की कहानी है तो 'गुनिता की गुड़िया' कैद से बाहर निकलने की एक स्त्री की छटपटाहट को बयां करती है। 'दुख का बोनसाई' मायके से लड़की के अटूट रिश्ते की कहानी है। ये कहानियां ऐसी हैं, जिनसे सहज ही हर स्त्री जुड़ाव महसूस करेगी। सटीक-जीवंत रूपकों के प्रयोग से भाषा जीवंत हो उठी है। कहानियों की भाषा ही नहीं कहन का शिल्प भी बेहतरीन है। *

पुस्तक: एक दिन का सफर, **लेखिका:** कल्पना मनोरमा,
मूल्य: 195 रुपए, **प्रकाशक:** अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

लघुकथा / गोविंद भारद्वाज

शक

शाम को ऑफिस से घर लौटते ही पति हरीश से उपासना ने कहा, 'देखिए, रोज शाम को पता नहीं पिताजी कहां जाते हैं और देर तक लौटते हैं।' 'कहां जाएंगे पार्क के अलावा। वहां इनके हम उम्र लोग मिलते होंगे। बस उनके साथ ही गपशप करते होंगे।' हरीश ने जवाब दिया।

'नहीं मुझे ऐसा नहीं लगता पिताजी कहीं और ही जाते हैं और मुझसे रोज अलग-अलग तरह का नाश्ता बनवाते हैं।' उपासना ने बताया। 'तुम भी बेवजह पिताजी पर शक कर रही हो। जो उनकी इच्छा है उन्हें करने दो। मां के चले जाने के बाद उनकी इच्छाओं का ख्याल हम नहीं रखेंगे तो भला कौन रखेगा?' हरीश ने समझाया। उसी समय पिताजी कमरे के अंदर आए और बोले, 'बहू आज गर्मा-गर्म समोसे बनाकर पैक कर दो, मुझे जाना है।' 'जी पिताजी।' उपासना ने धीरे से कहा। समोसे लेकर जैसे ही पिताजी घर से निकले, उपासना भी छुपते हुए उनके पीछे-पीछे चल दी। एक-डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद पिताजी एक वृद्धाश्रम के भीतर चले गए। 'अच्छा तो यह बात है। अपने किसी यार-दोस्त को खिलाने लाते हैं पकवान।' उपासना मन ही मन बुदबुदाई। फिर दावाजे की ओट लेकर खड़ी हो गई। पिताजी किसी के साथ बैठकर समोसे खाते हुए ठहाके लगाने लगे। 'अरे, यह आवाज तो बहुत जानी-पहचानी लग रही है। कौन हैं वो, जिसके लिए पिताजी रोज नाश्ता बनवाकर लाते हैं?' मन ही मन बुदबुदाते हुए उपासना ने कमरे के भीतर झांका। 'अरे यह क्या!' वह अवाक रह गई। उसके पैरों तले की जमीन खिसक गई। 'मेरे बाबूजी वृद्धाश्रम में!' खुद से कहकर वह रोने लगी। दरअसल, उपासना के बाबूजी पिछले एक महीने से वृद्धाश्रम में रह रहे थे, जिसकी खबर केवल हरीश के पिताजी को ही थी। इसलिए वे रोज उपासना और हरीश से बताए बिना अपने समधी से मिलने यहां आया करते थे। *

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम

अन्नामलाईयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै

धार्मिक स्थल
शिखर चंद जैन

आज पूरे देश में महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश भर के शिव-शक्ति मंदिरों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ता है। इस मौके पर हम आपको दक्षिण भारत में स्थित कुछ प्राचीन, भव्य और प्रसिद्ध शिव मंदिरों की विशेषताओं के बारे में बता रहे हैं। साथ ही गुजरात में स्थित अनोखे स्तंभेश्वर महादेव मंदिर के बारे में भी बता रहे हैं।

महादेव शिव-पार्वती को समर्पित भव्य-अनोखे-प्रसिद्ध मंदिर

जिस तरह उत्तर भारत में स्थित महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, नागेश्वर महादेव, वैद्यनाथ आदि शिव मंदिरों के प्रति श्रद्धालुओं में असीम श्रद्धा है। उसी तरह दक्षिण भारत में भी कई अनोखे और भव्य मंदिर स्थित हैं। प्राचीन भारत में चोल, पल्लव और चालुक्य जैसे कई राजवंशों ने लंबे समय तक दक्षिण भारत पर शासन किया। अपने शासनकाल में उन राजाओं ने देवों के देव महादेव भगवान शिव के अत्यंत भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों की अनोखी वास्तुकला दुनिया भर के पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। इनमें से कुछ मंदिर देश में स्थित बारह ज्योतिर्लिंगों में भी सम्मिलित हैं। ये प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और शिव भक्तों की आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर, श्रीशैलम, आंध्र प्रदेशः यह शिव मंदिर आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम नामक छोटे से शहर में कृष्णा नदी के किनारे स्थित है। सातवाहन शासनकाल के इतिहास के अनुसार इस मंदिर का निर्माण काल द्वितीय शताब्दी के आस-पास माना जाता है। बाद में विजय नगर साम्राज्य के राजाओं और छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मंदिर में मंडप सहित कई संरचनाओं का निर्माण करवाया। यह मंदिर नल्लामलाई पहाड़ियों पर स्थित है, जो मंदिर को एक सुंदर पृष्ठभूमि प्रदान करता है। दक्षिण भारत में स्थित मल्लिकार्जुन स्वामी मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर की एक और विशेषता यह भी है कि यह देवी सती के 52 शक्ति पीठों में से एक है। यहां भगवान शिव की मल्लिकार्जुन अवतार में और माता पार्वती की भ्रामरंबा रूप में पूजा की जाती है। यहां महाशिवरात्रि, उगादि, कार्तिकाई, श्रवणमहोत्सवम धूमधाम से मनाते हैं।

तट मंदिर, महाबलीपुरम

तट मंदिर, महाबलीपुरम, तमिलनाडुः तट मंदिर दक्षिण भारत के सबसे पुराने संरचनात्मक मंदिरों में से एक है। यह परिसर बंगाल की खाड़ी के तट पर तमिलनाडु के महाबलीपुरम में समुद्र के किनारे स्थित है। इसे अपनी द्रविड़ वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण पल्लव वंश के राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह) द्वारा ग्रेनाइट पत्थरों से कराया गया। इसके परिसर में तीन मंदिर हैं, जिनमें से दो भगवान शिव को और एक भगवान विष्णु को समर्पित है। मुख्य मंदिर पूर्व दिशा की ओर इस तरह से निर्मित है, जिससे सूर्योदय की किरणें शिवलिंग तक पहुंच सकें। सन् 1984 में इस मंदिर को महाबलीपुरम में स्मारकों के समूह के हिस्से के रूप में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

अन्नामलैयार मंदिर, तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडुः तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई शहर में स्थित अन्नामलैयार मंदिर बहुत प्रसिद्ध शिव मंदिर है। अरुणाचल पहाड़ियों की तलहटी में स्थित होने के कारण इसे अरुणाचलेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। यह पंचभूत स्थलों में से एक है, जहां भगवान शिव अग्नि तत्व के रूप में विराजमान हैं। शिवलिंग को अग्निलिंग भी कहा जाता है और यहां भगवान शिव की पूजा अरुणाचलेश्वर के रूप में की जाती है। अन्नामलैयार मंदिर परिसर भारत के सबसे विशाल मंदिर परिसरों में से एक है। इस मंदिर का 11 मंजिला गोपुरम भारत के सबसे ऊंचे मंदिर गोपुरमों में से एक है, जिसकी ऊंचाई 66 मीटर है। इस मंदिर के मुख्य देवता अरुणाचलेश्वर और अन्नामलाई अम्मन हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर, मदुरै, तमिलनाडुः मंदिर नगरी के नाम से विख्यात मदुरै के सबसे भव्य मंदिरों में से एक अरुलमिगु मीनाक्षी अम्मन मंदिर है, जिसे मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर की मुख्य देवी मीनाक्षी देवी हैं, जिन्हें देवी पार्वती का दिव्य अवतार माना जाता है। भगवान शिव की पूजा भगवान सुंदरेश्वरार के रूप में की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वह स्थान है, जहां सुंदरेश्वरार ने देवी मीनाक्षी से विवाह किया था। सन 1190 से 1205 ईसवी तक शासन करने वाले पांड्य राजा सदावर्मन कुलशेखरन प्रथम ने मीनाक्षी सुंदरेश्वरार मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपने गोपुरमों (मंदिर के शिखर), विशाल हॉल, मूर्तियों, नक्काशी और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह दक्षिण भारत के भव्य मंदिरों में से एक है। *

स्तंभेश्वर महादेव, वड़ोदरा गुजरात

दक्षिण भारत से दूर पश्चिमी राज्य गुजरात में भी एक प्रसिद्ध-विशिष्ट मंदिर स्तंभेश्वर महादेव स्थित है। इसमें एक ऐसा अनोखा शिवलिंग है, जिसका जलाभिषेक स्वयं समुद्र अपने जल से प्रतिदिन दो बार करता है। यह मंदिर अरब सागर में स्थित है और दिन में दो बार समुद्र में डूब कर अदृश्य हो जाता है। समुद्र का खारा जल इस शिवलिंग को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। यह मंदिर गुजरात के भरूच शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर सागर विस्तार के निकट जंबुसबुरता लुकालुका के नजदीक कावि, कंबोई गांव में स्थित है। इस मंदिर में स्वयंभू शिवलिंग की ऊंचाई 4 फीट और व्यास 2 फीट है। इस शिवलिंग के चारों ओर तट पर मंदिर का निर्माण सातवीं सदी के आस-पास हुआ था। माना जाता है कि चावड़ी के संतों द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। बाद में इस मंदिर का पुनर्निमाण आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा भी करवाया गया था। शिव महापुराण, स्कंद पुराण जैसे पौराणिक ग्रंथों में भी इस मंदिर के शिवलिंग का उल्लेख मिलता है।

मंदिर के दर्शन तभी संभव हैं, जब समुद्र में ज्वार कम हो और समुद्र का पानी तट से उतरने लगे। इस मंदिर के ओझल होने का कारण समुद्र में उठा ज्वार होता है। ज्वार के कारण पानी के उद्वेग के समय शिवलिंग पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। मंदिर भी सागर की गहरी लहरों में समा जाता है। तब तट से भी मंदिर दिखना बंद हो जाता है। यहां आने वाले शिवभक्तों को प्रतिदिन के दर्शन के समय ज्वार की जानकारी दी जाती है, जिससे ज्वार-भाटे के समय की जानकारी रहने पर उन्हें किसी परेशानी का सामना न करना पड़े। स्तंभेश्वर महादेव मंदिर में हर अमावस्या को मेला लगता है। प्रदोष, पूर्णिमा, एकादशी को यहां पूरी रात पूजा-अर्चना होती है। भगवान शिव के इस अद्भुत मंदिर में देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते रहते हैं।

- प्रभा पारीक

भारत में भी धूमधाम से मनाते हैं तिब्बती नव वर्ष लोसर फेस्टिवल

पर्व-संस्कृति
अंजू जैन

हम सब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को और हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष मनाते ही हैं। इनके अलावा कुछ प्रदेशों में तिब्बती नववर्ष लोसर भी मनाया जाता है। इसकी विशेषताओं पर एक नजर।

सुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को साकार होते देखने जैसा है तिब्बती नव वर्ष का भारत में धूमधाम से मनाया जाना। आज पूरी दुनिया में लोग एक-दूसरे के खान-पान, पहनावे और त्योहारों को अपना रहे हैं। भारत में पाश्चात्य नव वर्ष मनाया जाना तो बहुत सामान्य बात है लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि हमारे देश में तिब्बती नव वर्ष लोसर को भी धूमधाम से मनाया जाता है।

क्या है लोसर उत्सवः 'लोसर' दो तिब्बती शब्दों से मिलकर बना है, जिसमें 'लो' का अर्थ 'नया' और 'सर' का अर्थ 'वर्ष' होता है, जिसका सामूहिक अर्थ 'नया साल' है। लोसर तिब्बत, नेपाल और भूटान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध त्योहार है। हमारे देश में यह मुख्य रूप से सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती बौद्ध समुदाय एवं कुछ स्थानीय जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। यह उत्सव जीवन के नवीनीकरण, समृद्धि और आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है।

सांस्कृतिक महत्वः लोसर उत्सव को हालांकि 'तिब्बती नव वर्ष' कहा जाता है, लेकिन इसकी जड़ें बौद्ध धर्म के आगमन से भी पुरानी हैं। यह मूलतः 'बोन' परंपरा का हिस्सा था, जहां लोग सर्दियों के अंत में प्रकृति को धन्यवाद देने के लिए धूप जलाते थे। बाद में, जब बौद्ध धर्म तिब्बत की मुख्य धारा बना, तो यह उत्सव आध्यात्मिक और धार्मिक रंगों में रंग गया। इस वर्ष लोसर 18 फरवरी, बुधवार को मनाया जाएगा। इसका मुख्य उत्सव आमतौर पर तीन दिनों तक चलता है, लेकिन यह त्योहार 15 दिनों तक मनाया जाता है।

साफ-सफाई का महत्वः लोसर में साफ-सफाई का खास महत्व है। सबसे पहले 'लाबा लोसर' मनाया जाता है, जिसमें घरों की पुताई और सफाई की जाती है। सभी पुरानी, अनुपयोगी वस्तुओं को हटा दिया जाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से घर में अच्छा स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आती है। इस अवसर पर घरों को सजाया जाता है और नई प्रार्थना पताकाएं फहराई जाती हैं।

विशेष खान-पानः लोसर पर विशेष भोजन जैसे 'खप्से' (तले हुए बिस्कुट) और 'गुथुक' (एक प्रकार का नूडल सूप) तैयार किए जाते हैं। अमावस्या की पूर्व संध्या पर परिवार 'गुथुक' पीते हैं।

तीन दिनों तक विशेष कार्यक्रमः लोसर उत्सव के पहले दिन सूर्योदय से पहले ही मठों में शंखों की आवाज गूंजने लगती है। इस दिन लोग अपने धर्मगुरुओं का आशीर्वाद लेते हैं। देवताओं और आत्माओं के लिए धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, जिसमें घरों में घी के दीये जलाना और बौद्ध धर्मग्रंथों का पाठ करना शामिल है। दलाई लामा और अन्य उच्च लामाओं की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना की जाती है। घरों में 'चेमार' (सत्तू और मक्खन का मिश्रण) का भोग लगाया जाता है।

दूसरा दिन 'ग्यालपो लोसर' (राजाओं का दिन) होता है। यह दिन सामुदायिक मिलन का होता है। ऐतिहासिक रूप से यह दिन शासकों और उनके मंत्रियों के बीच संवाद का होता था। आज के संदर्भ में, यह सार्वजनिक समारोहों, नाच-गाने और मेलों का दिन है। लद्दाख और धर्मशाला की सड़कों पर पारंपरिक पोशाक 'चूबा' पहने लोग एक-दूसरे को 'लोसर ताशी देलेक' (नए साल की शुभ मंगलकामनाएं) कहते हैं।

तीसरा दिन 'चो-क्योंग लोसर' (धर्म रक्षकों का दिन) है। इस दिन लोग पहाड़ की चोटियों पर जाकर 'धूप' (सांग) जलाते हैं और प्रार्थना झंडे (लुंगता) फहराते हैं। ये झंडे शांति, करुणा और शक्ति के प्रतीक हैं।

मुखौटा नृत्य (छम): लोसर उत्सव का सबसे रोमांचक पहलू मठों में होने वाला 'छम' या मुखौटा नृत्य है। यह नृत्य बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। रंगीन रेशमी कपड़े और भयानक दिखने वाले मुखौटे पहनकर लामा नृत्य करते हैं। ड्रम और लंबी झांझों की थाप पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों को एक अलग ही आध्यात्मिक दुनिया में ले जाता है। *

फैशन जोन
प्रतिमा अरोड़ा

बदलते मौसम के अनुसार हमारे ड्रेसिंग सेंस में बदलाव होने लगता है। यही वजह है कि इन दिनों यंगस्टर्स शर्ट और जैकेट के कॉम्बो यानी शैकेट पहनना काफी पसंद कर रहे हैं। इसकी क्या है खासियतें और यंगस्टर्स इन्हें क्यों पसंद करते हैं, इस बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

बदलते मौसम में परफेक्ट शैकेट से मिले स्मार्ट लुक

सर्दी का मौसम जैसे-जैसे विदा ले रहा है, मौसम हल्का गर्म होने लगा है, तो फैशन की दुनिया भी करवट ले रही है। भारी कोट, मोटे स्वेटर, अब वार्डरोब या अलमारियों में जाने लगे हैं। इनके स्थान पर हल्के स्टाइलिश और बहुपयोगी शर्ट+जैकेट या शैकेट का क्रेज दिनोंदिन बढ़ने लगा है। शैकेट वास्तव में शर्ट की आरामदेह संरचना और जैकेट की मजबूती का मिश्रण होता है। यह न तो पूरी तरह से शर्ट और न ही पूरी तरह से जैकेट बल्कि दोनों का संतुलित रूप होता है। इसीलिए यंगस्टर्स के बीच यह तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

इसलिए युवाओं को है पसंदः फरवरी और मार्च का महीना वासंती मौसम के महीने होते हैं। इस दौरान न ज्यादा ठंड और न ही ज्यादा गर्मी होती है। ऐसे समय में शैकेट युवाओं के लिए परफेक्ट विकल्प बनकर आता है। लेयरिंग में आसानी भी एक बड़ा कारण है कि यह तेजी से ट्रेंडी हो रहा है। दरअसल टी-शर्ट, फुलस्लीव शर्ट या पतली हुडी के ऊपर शैकेट पहनकर स्टाइलिश लुक मिल जाता है। इसे पहनने का एक फायदा यह भी है कि यह शरीर पर टाइटनेस के साथ चिपकता नहीं है। शरीर लंबे समय तक इसके साथ कंफर्टेबल रहता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह यूनिसेक्स अपील रखता है। यह लड़कों और लड़कियों दोनों पर समान रूप से सूट करता है। इसीलिए खासतौर पर कॉलेज गोइंग यंगस्टर्स को शैकेट बहुत पसंद आ रहा है। इसका फैब्रिक पतला होता है। यह फिट होता है लेकिन बहुत टाइट नहीं होता है। यह ठंड से बचाता है लेकिन बहुत गर्म अहसास नहीं कराता है। इसके बटन और सिलाई काफी मजबूत होती है। इसका वजन हल्का होता है ताकि लेयरिंग को आसान बनाए। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स इन्हें पहनना पसंद करते हैं। शैकेट का ट्रेंड सिर्फ अपने देश में ही नहीं पूरी दुनिया के युवाओं को भा रहा है, क्योंकि अगर फैशन इतिहास को देखें तो शैकेट की जड़ें वर्किंग मैन वियर और मिलिट्री क्लोदिंग से जुड़ी हुई हैं।

बनता है इन फैब्रिक्स सेः शैकेट आमतौर पर कॉटन ट्विल, डेनिम, कॉडरॉय और वूलेन मिश्रित फैब्रिक से बने होते हैं। हल्के वजन वाले कॉटन मिक्स शैकेट इस बदलते मौसम में ज्यादा पसंद किए जाते हैं। अगर थोड़ी ठंड महसूस हो तो वूलेन मिक्स्ड शैकेट आप वियर कर सकते हैं। वैसे तो आपको शैकेट्स में कलर्स की ढेरों वैरायटीज मिल जाएंगी। आप उनमें से अपनी पसंद का कोई कलर सेलेक्ट कर सकते हैं। लेकिन अगर शैकेट में कलर और पैटर्न ट्रेंड की बात करें तो ऑलिव ग्रीन, टैन ब्राउन, चारकोल ग्रे, डेनिम ब्लू कलर के शैकेट्स बहुत अट्रैक्टिव लगते हैं। अब यंगस्टर्स के बीच ब्राइट कलर वाले शैकेट्स के बजाय सॉफ्ट और अर्थी टोन वाले शैकेट्स की मांग ज्यादा बढ़ रही है, क्योंकि ये ज्यादा मैचिंग फ्रेंडली होते हैं। जहां तक शैकेट में ट्रेंडी पैटर्न और डिजाइन की बात है तो चेक्स प्रिंटेड और प्लेड पैटर्न यंगस्टर्स के बीच काफी पसंद किए जाते हैं।

लगातार बढ़ रही है डिमांडः हाल के सालों में बदलते मौसम में बाजार में शैकेट की लगातार मांग बढ़ रही है। क्योंकि कुछ वर्षों में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और लोकल ब्रांड ने अपनी नियमित क्लेक्शन में भी शैकेट को शामिल किया है। फैशन रिटेल से जुड़े जानकारों के मुताबिक यह ट्रांजिशनल वियर यानी बदलते मौसम के समय का फैशन हर साल 15 से 20 फीसदी तक वृद्धि हासिल कर लेता है। इसकी बढ़ती मांग का एक कारण यह है कि यह मीडियम रेंज में उपलब्ध होता है। वियर करने पर बहुत सोबर और एलीगेंट लुक देता है। इसके अगर बजट रेंज की बात करें तो शैकेट 800 से 1500 रुपए में मिल जाता है। मिड रेंज की बात करें तो 1500 से 3000 रुपए के बीच इसका रेंज देखा जा सकता है। जबकि प्रीमियम रेंज की बात करें तो 3000 रुपए से ऊपर आपको फाइन क्वालिटी के शैकेट मिल जाते हैं। इसकी यह रेंज दर्शाती है कि हर वर्ग के यंगस्टर्स के लिए शैकेट्स उपलब्ध हैं। यही कारण है कि अपने देश में इसकी डिमांड बदलते मौसम में बढ़ जाती है। इसकी मांग के पीछे एक कारण सस्टेनेबिल्टी भी है। कई ब्रांड अब रि-साइकिल्ड फैब्रिक और आर्गेनिक कॉटन से शैकेट बना रहे हैं। उससे पर्यावरण पर कम असर पड़ता है और युवावर्ग को यह सोच पसंद आती है कि वे स्टाइल के साथ-साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारियां भी पूरी कर रहे हैं।

पर्सनालिटी को देता है नया लुकः शैकेट की एक खासियत यह है कि यह तमाम दूसरे फैशन के साथ मर्ज नहीं हो रहा बल्कि एक अलग से पहचान बनाने में कामयाब है। आज के दौर में यंगस्टर्स फैशन को केवल कोई भी ड्रेस पहनने तक सीमित नहीं मानते बल्कि उससे अपने आराम और प्रभाव की तुलना करते हैं। शैकेट इन दोनों कसौटियों में खरा उतरता है। यही कारण है कि यह युवाओं को पसंद आता है। इनसे उन्हें स्मार्ट लुक मिलता है। *

फिल्म 'विधाता' में दिलीप कुमार-शम्मी कपूर

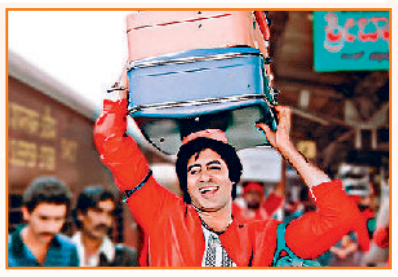
फिल्म 'कुली' के सीन में अमिताभ बच्चन

'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का क्लाइमेक्स सीन

सिने ट्रेंड
अशोक वाधवाणी

रेल में सफर का अलग ही मजा होता है। देश के करोड़ों लोगों की लाइफलाइन से जुड़ी रेलगाड़ी को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूब दिखाया जाता रहा है। खास बात यह है कि फिल्मों में ट्रेन वाले सीन और सॉन्ग्स खूब पॉपुलर भी हुए हैं। यहां बात कुछ ऐसी ही फिल्मों की, जिनके टाइटल, सीन या सॉन्ग में ट्रेन मौजूद रही है।

फिल्मों में खूब हुए पॉपुलर ट्रेन बेस्ड सींस-सॉन्ग्स

अपने देश में आज भी अधिकांश लोगों के लिए रेल यात्रा सबसे सुविधाजनक और सस्ती मानी जाती है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों में भी मालगाड़ी से लेकर, यात्री गाड़ी और अत्याधुनिक ट्रेनें भी दिखाई जाती रही हैं। ट्रेन यात्रा से जुड़े दृश्य और गीत मन में अमिट छाप छोड़ते हैं। एंटरटेनमेंट के लिए रेल में रोमांस, रोमांच, रहस्य के अलावा रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म, रेल की पटरियां, कुली आदि बहुत कुछ हिंदी फिल्मों में दिखाए जाते रहे हैं।

ट्रेन से जुड़े फिल्मों के नामः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनी हैं, जिनके टाइटल ट्रेन या रेलवे के इर्द-गिर्द रखे गए हैं। पुराने जमाने की नायिका नादिया की कई चर्चित फिल्मों के नाम ट्रेन के नाम पर ही रखे गए। उनमें से प्रमुख हैं 'मिस फ्रंटियर मेल'(1936), 'पंजाब मेल'(1939), 'दिल्ली एक्सप्रेस' (1949)। इसी क्रम में 'प्लेटफॉर्म' (1955), '27 डाउन' (1974), 'द ट्रेन' (1971), 'कुली' (1984), 'द बर्निंग ट्रेन' (1980), 'चेन्नई एक्सप्रेस' (2000) जैसी फिल्मों के टाइटल्स से ही पता चलता है कि फिल्म की कहानी रेल के इर्द-गिर्द घूमने वाली होगी।

फिल्मी दृश्यों में ट्रेनः बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में बनीं, जिनकी शुरुआत में ही रेल दिखाई गई, जैसे- दोस्त (1974)। कुछ फिल्मों का क्लाइमैक्स रेलवे स्टेशन पर फिल्माया गया है, जैसे- 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे'(1995)। इसके अलावा शाहरुख खान की कुछ और फिल्मों में भी ट्रेन की अपनी विशेष भूमिका रही है। 'दिल से', 'स्वदेश', 'वीर-जारा', 'रईस', 'पठान', 'जवान' आदि कई फिल्मों में लाजवाब रेल सीन फिल्माए गए हैं।

धर्मेंद्र का रेल कनेक्शनः पिछले वर्ष दिवंगत हुए सदाबहार अभिनेता धर्मेंद्र की शुरुआती फिल्में जैसे-'शोला और शबनम', 'आपकी परछाइयां', 'फूल और पत्थर' से लेकर 'दोस्त' आदि में रेल का रोल इंपॉर्टेंट रहा। दिलचस्प बात यह है कि धर्मेंद्र ने फिल्मों में आने से पहले कुछ समय तक रेलवे में क्लर्क की नौकरी भी की थी।

ट्रेन में फिल्माए गए कुछ यादगार दृश्यः फिल्मों में ट्रेन के कई ऐसे दृश्य फिल्माए गए हैं, जो यादगार बन गए। 'गांधी' (1982) में एक छोटा सा सीन है, जोकि गांधी जी के जीवन का टर्निंग पॉइंट बना। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन के फर्स्ट क्लास में यात्रा करने के कारण एक अंग्रेज, नाराज होकर, गांधीजी को एक स्टेशन पर सामान समेत डिब्बे के बाहर फेंक देता है। इसके अलावा इसी फिल्म में गांधीजी की ट्रेन से यात्रा के कुछ और सीन भी हैं। 'जब वी मेट' (2007) में फिल्म का नायक मुंबई से ट्रेन में चढ़ता है। रतलाम स्टेशन पर नायिका की ट्रेन छूटती है। आगे दोनों की ट्रेन जर्नी, रेल कर्मियों के साथ उनका वार्तालाप आदि कई रोचक, मनोरंजक दृश्य हैं। 'बड़े मियां, छोटे मियां' (1998) में अमिताभ बच्चन और गोविंदा ट्रेन की बोगी के सभी यात्रियों का सामान, चालाकी से लूट लेते हैं। कई कलाकारों ने फिल्म में रेल कर्मियों के रोल निभाए हैं। 'अजनबी' (1974) में राजेश खन्ना स्टेशन मास्टर बने हैं। 'विधाता' (1982) में दिलीप कुमार और शम्मी कपूर ट्रेन ड्राइवर बने हैं। ओम प्रकाश ने 'जूली' (1975) में ट्रेन ड्राइवर का रोल निभाया है।

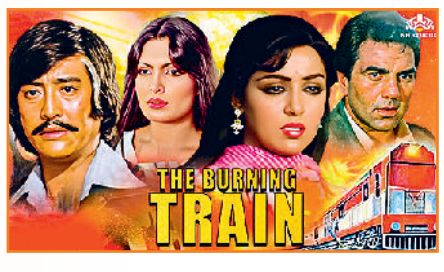

ट्रेन पर आधारित गीतः ट्रेन के भीतर, ट्रेन की छत पर या ट्रेन के इर्द-गिर्द कई फिल्मों के गीत भी फिल्माए गए हैं, जो काफी लोकप्रिय हुए। 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की' ट्रेन में फिल्माए गए फिल्म 'जागृति' (1954) के इस गाने में अध्यापक की भूमिका में अभि भट्टाचार्य, छात्रों को भारत देश के इतिहास से अवगत करवाते हैं। 'आशीर्वाद' (1968) में अशोक कुमार द्वारा गाया और उन्हीं पर फिल्माया रैप सांग 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक' बॉलीवुड का शुरुआती रैप सॉन्ग है। इसके कई रिमिक्स भी बन चुके हैं। 'दिल से' (1998) में एक नया, अनोखा प्रयोग किया गया था। फिल्म मे 'चल छैंया छैंया' गीत रेल के डिब्बों पर पिक्चराइज किया गया डांस सॉन्ग है। 'दोस्त' (1974) का गीत 'गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है...' आज भी लोकप्रिय है। फिल्म 'कुली' (1983) में अमिताभ बच्चन पर फिल्माए गए गीत 'सारी दुनिया का बोझ हम उठाते हैं' में भी ट्रेन और रेलवे प्लेटफॉर्म के दृश्य नजर आते हैं। इन लोकप्रिय गीतों के अलावा भी रेल में हर मूड, सिचुएशन के गानों, दृश्यों की लंबी लिस्ट है। *